हो दुरंग हिसिर

आधुनिक हो कविता संग्रह

(हिन्दी अनुवाद के साथ)



डॉ. दमयन्ती सिंकु

BVP - 2059
3/5/18

8/9

हो दुरंग हिसिर

(आधुनिक हो कविता संग्रह)

हिन्दी अनुवाद के साथ

content letter received
earlier

संपादकीय/अनुवाद

डॉ. दमयन्ती सिंकु

झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-93-81720-56-1

प्रथम संस्करण : 2013

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा
शोप नं.- डी. जी. 03, न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन नं. 834001
मो. 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

अजिल्द : 120.00
सजिल्द : 250.00

Ho Durang Hisir

by Dr. Damyanti Sinku

Geeta Kora
Member :
Jharkhand Legislative Assembly

सत्यमेव जयते

Address :
Village-Patahatu, P.O. Maluka
Dist. West Singhbhum, Jharkhand

Correspondence Address :
At Dindayal Nagar, Officer Colony,
Booty Road, Ranchi - 834009
Mobile : 09470590888
Talefax : 0651-2360311



–: संदेश :–

मुझे जानकर बहुत खुशी हो रही है कि डॉ. दमयन्ती सिंकु के सम्पादन/लेखन/अनुवाद एवं सहयोगियों के सहयोग से जनजातीय भाषा में "हो दुरंग हिसिर" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें "हो" जनजाति समाज की विरासत, प्रकृति के प्रति समर्पण, श्रद्धा और प्रेम पर प्रकाश डाला गया है। मेरी उम्मीद है कि इस पुस्तक के माध्यम से लोग जनजातीय विरासत और प्राकृतिक महत्व से अवगत होंगे।

सधन्यवाद!

श्रीमति गीता कोड़ा
Geeta Kora
सदस्य
झारखण्ड विधान सभा
जगनाथपुर, प० सिंहभूम

प्राक्कथन

हो–दुरंग हिसिर पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हो रही है। इस पुस्तक में मैं समाज के अति सम्मानीय, बुद्धिजीवियों द्वारा की गई रचनाओं को संग्रहित करने का प्रयास किया है। ज्ञातव्य है कि हो–भाषा में साहित्य की रचनाएं काफी सीमित है। हो–भाषा जानकार एवं इस भाषा की जानकार जो नहीं रखते हैं, उनके जिजीविषा शांत करने का माध्यम बन सकती है। झारखण्ड की जनजातीय भाषाओं में हो–भाषा की भी विशिष्ट पहचान है। एक समृद्ध व पुरातन संस्कृति को समर्पित इस पुस्तक के जरिये मैंने ये प्रयास किया कि हो भाषा पुष्पित और पल्लवित हो और पाठकों को सामग्री की कमी महसूस न हो। मुझे उम्मीद है कि पढ़ने में रूचि रखने वालों के लिए ये पुस्तक उपयोगी होगी। मेरी ओर से हो भाषा–भाषियों को एक तोहफा होगी।

मैं व्यक्तिगत तौर से तमाम रचनाकारों से संपर्क कर न सकी। मुझे उम्मीद है कि आप लोगों का जाने अनजाने में दिल दुखाने का कोई इरादा नहीं है। साथ यह यह भी आशा करती हूँ कि पुस्तक की कमियों से आप एवं पाठकगण मुझे परिचित करायेंगे। ताकि अगले संस्करण में उन कमियों को मैं दूर कर सकूँ।

झारखण्ड झरोखा के सौजन्य से ही हो–भाषा के शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं भाषा प्रेमी के लिए यह पुस्तक प्रस्तुत किया जा सका है। इसके लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

दमयन्ती सिंकु

डॉ. दमयन्ती सिंकु

विषय सूची / पिचा सकम

	पाठ	कवि/दुड़ु	पृष्ठ सं.
1.	गोहारि	चंद्रभूषण देवगम	08
2.	दुलड़ गतिङ	डॉ. दमयन्ती सिंकु	10
3.	तेते: चन्दु	डॉ. दमयन्ती सिंकु	12
4.	गोलनचि बा	डॉ. दमयन्ती सिंकु	12
5.	अबुअ: झारखण्ड	डॉ. दमयन्ती सिंकु	14
6.	सिंगि	डॉ. दमयन्ती सिंकु	16
7.	गुसिया	बागुन बोदरा	18
8.	एलाबु सेसेन	(साभार तुर्तुङ)	20
9.	कोल गुरू लको बोदरा	बिनोद सिरका	20
10.	उटइ में	सुधीर पाट पिंगुवा	22
11.	होरा बर: रेय: सेंया	बिरसिंह बुड़ीउली	24
12.	जोनोम हस:	सागर पाट पिंगुवा	26
13.	तोरेङ नेकागे अदाओ: नमा–नमा अपसराय रे	घनश्याम बोदरा	28
14.	पोनाई चन्दु तरल लेका	रवि कुमार डांगिल	32
15.	सनिङ रेन कुपुल	घनश्याम बोदरा	34
16.	सनङ सेसा अम: सेसा	डोबरो बुड़िउली	36
17.	होय्यो गमा	पूर्णचंद्र बिरुवा	40
18.	रूमुल केन बिरसा	घनश्याम गागराई	40
19.	जिबनान बाड़ा	मदन बानरा	42
20.	एतो एपेतो बेपर होरा	योगेश्वर हेस्सा	44
21.	पेरेम बाड़ा चुइलाम नेमाञ	कमल लोचन कोड़ाह 'हो'	46
22.	एलाबु सागोम	डॉ. जानुम सिंह सोय	48
23.	आलोपे गिति: आ	राजू डांगिल	52

24.	हपानुम	राज डांगिल	54
25.	गोअरि तना	किशन चातर	56
26.	उड्डु लेकाम	प्रधान गागराई	56
27.	सिंह राजा	प्रधान गागराई	58
28.	हुदा समाज	डॉ. सोनिया कुमार तियु	60
29.	आलोम सेनो:	जेम्स देवगम	62
30.	अञ जिबोन सनङ	घनश्याम बोदरा	64
31.	दुलड़ जिबोन	मनोज मेलगांडी	66
32.	अबु दिसुम	सुखमती बारी	68
33.	अम्बारोब होन	आर.के. सिंकु	70
34.	तोवाऊ चेणे	कुई चामी सिंकु	72
35.	संगि हिता	बागुन बोदरा	74
36.	सुगड़ डहर	डॉ. सोनेया कुमार तियु	76
37.	दिशुम मुचड चि सेटेर तना	सागु समड	78
38.	दिसुम अमिङ होरा कोरे	जोंगा सिंह कुंटिया	80
39.	ज:इत: अ् रेयो अलोम कजिया	घनश्याम बोदरा	84
40.	सिंहभूम दिशुम रे	घनश्याम गागराई	86
41.	लको बोदरा	डॉ. दमयन्ती सिंकु	88
42.	जिबोन	नीरज जगमोहन सिंकु 'चिनगारी'	90
43.	सेत: पङ रे	लाल सिंह बोयपाई	92
44.	उटानाबु	सुष्मिता सिरका	94

1. गोहारि

(1) सिंगिबोंगा, सिंगिबोंगा
आमगे आम सिंगिबोंगा,
आमगे अपु, अमगे एंगा
सिंगिबोंगा, सिंगिबोंगा

(2) आमगे आम सिंगिबोंगा
दुकु रेयो आमगे देंगा
सुकुगे आमआ देंगा
सिंगिबोंगा, सिंगिबोंगा

(3) आमगे आम सिंगिबोंगा
सिरमायते ओते जोका
कोचा-मोचा ओकोन जोका,
सेटेरेनतान, नितिरेनतान

(4) आमआ जेटे, आमआ तुर्तुङ
आमआ एलं, आमआ नुतुम,
सिंगिबोंगा, सिंगिबोंगा
आमगे आम सिंगिबोंगा

चंद्रभूषण देवगम
(दुम्बीसाई)

1. गोहारि (वंदना)

हे प्रभु, हे प्रभु,
हर तरफ तू ही तू है प्रभु,
तू ही पिता, तू ही माता है,
हे प्रभु, हे प्रभु
सभी ओर तू ही तू है प्रभु
दुख में भी तू ही सहायता करता है
सुख में भी तू ही साथ देता है
हे प्रभु, हे प्रभु
चारों ओर तू ही तू है प्रभु
आकाश से धरती तक तू ही है
कोना-कोना, न जाने
कहां तक तू ही है
पहुँच रहा है, फैल रहा है
तुम्हारा उजाला, तुम्हारा प्रकाश
तुम्हारा स्नेह, तुम्हारा नाम
हे प्रभु, हे प्रभु
सभी दिशा में तू ही तू है।

2. दुलड़ गतिङ

मुनु सोमय सेनोयन जुडिङ
जेतन सुकु बनोयना गतिङ
अम रेगे अञ जिबोन सरूबकन
अम रेगे अञ मोन मोलंग जहरूकन।

जिबोन रेयः सुकुञ नम लेडा
इमतंग अमः दुलङ टइकेना गतिङ
जिबोन रे दुकुञ नम केडा
जुड़ि तञ अमेम बगे केडिञ

अञ सनङ टइकेना गतिङ
सिङबोंगा तायते अमेञ असिम
अम तायते "अमगेञ" असिम
अञ रांसा टइकेना जुड़िञ

येसुञ सुकुअडमे गतिङ
नेन जिबोन रे कञ नम केड में गतिङ
येसुअ सनङ अडमे अमगे जुड़िङ
नेन जिबोन रे कञ नम केड में गतिङ

तिसिंग दो आमेम एटः यना
निरल जिबोन तेम सनिङ केडिङ
निमिर दोलं इपन यना
निमिर दोलं बपागे यना

जा रेम टइन अञ जिबोन रेगे
जेता रेम बसाय अञ मोलोंग रेगे
सुकु तेगे टइन में जुड़िञ
अञ निरल जिबौन रेगे।

डॉ. दमयन्ती सिंकु (दूरदर्शन 7 जनवरी 2012)

2. प्यारे मित्र

वक्त गुजर गया मेरे दोस्त
कोई खुशी नहीं है, मेरे दोस्त,
तुम में ही मेरी जिंदगी समाहित है
तुम ही मेरे दिल दिमाग में समाये हो।

जिंदगी की खुशी मिली
जिस वक्त तुम्हारा साथ था! मेरे दोस्त
जिंदगी में अनेकों दुख मिला
मेरे दोस्त! जिस समय तूने मुझे साथ छोड़ा।

मेरी चाहत थी? मेरे दोस्त
भगवान से तुझे मांग लूं
मेरी खुशी थी, मेरे दोस्त
तुम से ''तुम्हीं'' को मांग लूं।

मैंने बहुत चाहा, मेरे दोस्त!
इस जहां में तुम नहीं मिले, मेरे दोस्त!
बहुत चाहा मैंने तुम्हें मेरे दोस्त
तुमने मुझे छोड़ा मेरे दोस्त, कहां हैं?

इस जिंदगी में तू न मिला मेरे दोस्त
दिल से तुझे चाहा था, मेरे दोस्त
अब हो गये जुदा
अब हो गये हम अलग।

कहीं भी रहो मेरे दिल में ही
कहीं भी बसो मेरे मन मस्तिष्क में ही
खुश रहो जहां रहो मेरे दोस्त
सदा मेरे दिल में रहो।

3. तेतेः चन्डु

दिसुम रेयः जुगति तना
दिसुम रेयः नियति तना
तेतेः चनब, नुबा तना।।

नेया दो नोसोल कजि तना
नेया दो सरि कजि तना
तेतेः चनब नुबा तना।।

मनवा सिरजोन होबायना
दिसुम रे होनको हुजुयना
तेतेः चनब, नुबा तना।।

मनवा उड़ हतं रे हजुयना
बुगिन सुकु जिबोन रे नमेयना
तेतेः चनब नुबा तना।।

नेलोः तना पिलिः – पिलिः
अदाव तना जिलि–मिलि
तेते चनब नुबा तना।।

तेतेः चन्डु सुकु अदाव?
नुबा चन्डु दुकु अदाव
तेतेः चनब, नुबा तना।।

4. गोलनचि बा

कुडम रे गोलनचि बा
नेलते सुकुगे अदावः
रिलामला पुटाव अकना
मुतुड–मुतुड सोअन
दरू तेदो तुम्बुरूब गेया

3. चाँदनी रात

संसार का ऐसी नियति
संसार का ऐसा नियम
चाँदनी के बाद अंधेरी रात है।
यही सही बात है
यही हकीकत है
चाँदनी के बाद अंधेरी रात है।

मानव का सृष्टि हुआ
संसार में मानव का आगमन हुआ
चाँदनी के बाद अंधेरी रात है।
अच्छी सोच दिमाग में आया
अच्छी सुख-सुविधा भरी जिंदगी मिली
चाँदनी के बाद अंधेरी रात है।

दिख रहा है चमकीला भरा
झिलमिल सा महसूस हो रहा है
चाँदनी के बाद अंधेरी रात है।
चाँदनी रात सुख भरी लगती है
अंधेरी रात दुख भरी होती है
चाँदनी के बाद अंधेरी रात है।

डॉ. दमयन्ती सिंकु (दूरदर्शन 7 जनवरी 2012)

4. गोलनचि फूल

पिछवाड़ी में गोलनचि फूल
देखते ही, खुशी लगती है
सफेद फूल देखते ही,
मन खिल सा जाता है
खुशबू से भरी होती है
पेड़ अधिक बड़ी नहीं होती

कोतो–कोतो रे जुम्बा बा लेन
तरल–तरल पुटाव लेना
पुन्डि–पुन्डि गोलनचि बा
सिङबोंगा को बोंगाई तना
तरल–तरल गोलनचि बा
बोंगा बुरू को सेबा: तान।
सिंग दिसुम कुइ होन को
गोलनचि बा तेको बा कना,
डिन्डा हपानुम को
गोलनचि डलि तेको
डलिया अकन।
दोला तेबु नेल जोमा
गोलनचि बा ते बोंगा
कोकोसेबा तन
दोला तेबु चिने जोमा डिन्डा
हपानुम को
गोलनचि बा तेको डलिया कन

5. अबुआ झारखण्ड

अबुअ: झारखण्ड राइज येसु सुन्दोर
अबुअ: जोनोम दिसुम येसु सुगड़
रोकोम रेया: कारखाना, खदान,
हीरा, मोती, सोना चाँदी ते पेरेह अकन।
किसिम–किसिम बा जो ना
रोकोम–रोकोम कजि जगर ना
पोरोब पोनाइ ते सरूब अकन
सुसुन दुरं, रासिकाते अटल अकन।

डाली–डाली में गुच्छा–गुच्छा फूल
सफेद–सफेद गोलनचि फूल
भगवान को चढ़ायी जाती है।
सफेद गोलनचि फूल
भगवान की सेवा की जाती है
सिंङ देश की बालाएं
गोलनचि फूल से जुड़ा सजाती हैं।
कुंवारी बालाएं
गोलनचि की गुच्छा से
खुद को सजाती है
आओ चलो देख आयें
गोलनचि फूल भगवान को
अर्पित की जाती है
आओ चलो पहचान कर आयें
कुंवारी बालाओं को
जो गोलनचि फूल से सजी हुई हैं।

5. हमारा झारखण्ड

हमारा झारखण्ड राज्य बहुत सुंदर
हमारा जन्म भूमि बहुत प्यारा।
अनेक तरह का कारखाना, खदान
हीरा मोती, सोना चाँदी से भरे पड़े हैं।
विभिन्न प्रकार के फल–फूल हैं
विभिन्न प्रकार की बोलियाँ हैं।
पर्व त्योहार से समाहित हैं
नाच गान एवं खुशियों से भरी पड़ी है।
जन्म लिया था, बीर बिरसा

जोनोम लेनाय बीर बिरसा
तुर लोनाय कोल लको बोदरा।
बइ लेडाय होरा बिरसा, ना
अमिन लेडाय टेबो बुरू हंगिना।
लको! हो होनको तला रे रिका लेडा किङ
हुदा तला रे नसुर लेडा किङ।
बइ लेडा क़िङ लिपि तबु
ओल लेडा किङ पुति तबु
मंडा लेडा किङ कानू तिकिङ
मुलुः लेना किङ पूर्णचंद्र तिकिङ।
कानू! दुरं तेकिङ रूमुल लेडा सिंहबुइ
पइटि केड़े तेकिड रका लेडा सिङ दिसुम
अबुअः झारखण्ड राइज येसु सुन्दोर
अबुअः जोनोम दिसुम येसु सुगड़।

डॉ. दमयन्ती सिंकु (दूरदर्शन 7 जनवरी 2012)

6. सिंगि

अंगयन रे सिंगि तुर्तुङ
अयुबयन रे चन्डु मसकल
चुइलव अलोचा हुजु हेन्दे नुबा
जिबोन रे अबेन लगिड जुड़ि
टइओचा मसकल गे मसकल!
निरेयन चन्डु रे हेन्दे नुबा
मुलुयन चन्डु रे तेतेः मसकल
चुइलव अलोचा हुजु दुकु
जिबोन रे अबेन लगिड जुड़ि
टइओचा सुकु गे सुकु!!

उदय हुआ था, कोल लको बोदरा
बिरसा ने बनाये राह
तैयार किये राह टेबो घाटी का।
लको! हो समाज के बीच रखे
समाज के बीच फैलाये
बनाये थे समाज के लिए लिपि
लिखे थे पुस्तकें, समाज के लिए।
कदम रखे थे हमारे बीच कानू
उदय हुए थे पूर्णचन्द।
कानू की गीत से गुंजायमान हुआ था सिंहभूम
सुरक्षित रखे सिंह देश, को अपने काम से
हमारा झारखण्ड राइज बहुत सुंदर है
हमारा जन्म भूमि बहुत प्यारा।

6. सूरज

सुबह होने पर सूर्य की किरणें
शाम होते ही चाँद की चाँदनी
कभी भी न आये अंधेरा
जिंदगी में तुम्हारे लिए है! मेरे दोस्त!
रहे हमेशा उजाला ही उजाला।
अमावस्या की काली रात
पूर्णिमा की वो चाँदनी रात
कभी भी न आये दुख
जिंदगी में तुम्हारे लिए हे! मेरे दोस्त!
रहे हमेशा सुख ही सुख
सुबह होते ही रंग बिरंगे, चिड़ियाँ

अंगयन रे किलिमिलि ओय दुदलुम को
अयुब यन रे उरि मेरोम गुटि–गुटि
रूआ तना को अपन–अपन जहरू बसा ते
जिबोन रे अबेन लगिड जुड़ि
टइओचा दुलड़ गे दुलड़!!!

डॉ. दमयन्ती सिंकु
(दूरदर्शन 7 जनवरी 2012)

7. गुसिया

जगर कोरे अयुमो:, इंगुल कोते चिरगलो:
हरताहसा गुसिया, आदिवासी को गे।
नेन हसा ब्हारोत रे, सिदा मुनु पहिल
आदिवासी को गे।
एशिया तला मलाय रे, जलुवा बजिगर को
हुजु: लेन नेन त:, बिसि बिटल केड।
ओल अंका क्षिति को, चिति–चिति केड
आदिवासी हिताहसा को, तेगा तोपा–केड।
सुहय–सुहय ते तयोम, चकड लबु: ते चनब
आदिवासी राज गंडु को, तञ एसेर केड।
दनं कन्ते नन्दनी, सनागम रिंगा से
आदिवासी नुतुम, बगड़ा चबा तन
हुजु: पे आदिवासी, हुड़िड मरं दुनुब रे
जुर जुमर जुड़ि ते, हिताहसा नम सगोम।

बागुन बोदरा

श्याम होते ही मवेशियों का वो झुण्ड
वापसी करते हैं, विश्राम गृह को
जिंदगी में तुम्हारे लिए हे! मेरे दोस्त!
रहे हमेशा प्यार ही प्यार।

7. मालिक

बातों से सुनाई पड़ती है, इशारा से पता चलता है
इतिहास से मालिक, आदिवासी ही है।
इस मिट्टी भारत में, प्राचीन काल पहले से
आदिवासी ही हैं।
एशिया के बीच में, झूठी बाजीगर
यहाँ आये थे, यहाँ की आवोहवा को
झूठन करने।
लिखी अंक एवं लिपि को
चितर-बितर कर आदिवासी
की इतिहास को
अपने पैरों तले कुचल कर।
धीरे-धीरे लांघते हुए, ठग कर बाद में
आदिवासी राज्य के सिंहासन से
लूटपाट कर छीन कर।
छिप कर नन्दनी, संपूर्ण अकाल में
आदिवासी का नाम, खराब हो चला।
आओ आदिवासी, छोटी बड़ी बैठकी में
बैठ कर एक हो जुट कर
इतिहास को ढूढ़ें एवं सजायें।

8. एलाबु सेसेन

एंला एला एलाबु, देला देलाबु
सोबिन चनब कन को, सोबिन हगा मिसि को
देला बु नुटाना, एला-एला बु देलाबु सेनोआ
बिड्दा बुद्धि ऐतो केते ज्ञान सरसल होरा रे
काबु चनाबेना हगाञ काबु लन्डियान
एला एला एला बु देलाबु सेसेन
बिडदा बुद्धि एतो केरे सनागम संगेन जन रे
जिबोन सुकु नमोआ तबु जाति मरङोअ
एल-एला एलाबु देलाबु निरेआ
अबु जुपिड़ि तड़िन जन रे दिसुम सुसर एतो केरे
तुतुम 'तुरतुङ' तड़ीयोआ अबु दिसुम रे
एला बु देलाबु सेनोआ।

साभार (तुर्तुङ सरदि चन्डु)

9. कोल गुरू लको बोदरा

हे! दोरोम गुरू अमगे, अमगे होम्मो रोवा
अङ यनम सिंगि मरसल रे निदम नेलो चन्डु लेका
अङ सेंया मसकल कोरे अलेयो जुड़ि मिसा लेम्
जिबोन-जुड़ि मेनअ को लेका जुड़ि मिसा लेम
अङ जाति दोरोम कोरे जाति मिसा लेम्
उड्डु तम ले पुरया अले पटुवा होन की
अमः जिबोन रोवा रे बासा तले मे
मसकल केडम् वारंग क्षिति हो को तला रे
अमः उड्डु को ले पुरा पुराया जिबोन मेनः जोङ
हसा रे बु बसा तडा, क्षिति गे अबुआ बिति तना
नेन क्षिति-बिति होनङ कम नमड् ले रेदो

8. आओ चलें

आओ आओ चलें, चलो चलें
सभी पीछे वाले, सभी भाई बंधुओं चलो उठें
आओ-आओ चलो-चलो चलें
विद्या बुद्धि सीख कर ज्ञान की राह में
पीछे नहीं होंगे, बहनों सुस्त न करें
आओ-आओ चलें, चलो-चलो चलें
विद्या बुद्धि सीख कर सभी शिक्षित होकर
जिंदगी में सुख मिलेगा, तभी होगी जाति की पहचान
आओ आओ चलें, चलो दौड़े
हम लोगों के बीच दोस्ती कायम रहने से,देश सेवा सीख कर
हर कठिन कार्य को 'तुरतुङ' भी हल करेगा हमारे देश में
आओ चलें, चलो चलें।

9. कोल गुरू लको बोदरा

हे! धर्म गुरू, आप ही आप हमारे शरीर की आत्मा में
सूर्योदय हुआ, सूर्य की उजाला से रात में दिखाई देते हो चांद जैसा
सूर्योदय की उजाला में, तुम्हें अपने साथ न करें
जीवन-साथी की तरह तुम्हारी संगनि बने
अपने जाति एवं धर्म में तुझे मिला लें
हमारे बारे में सोचें, हम विद्यार्थी बच्चों को
अपने जीवन के आत्मा में हमें बसा लें
उजाला किये वारंग क्षिति लिपि को हो समाज के बीच में
मिट्टी में मिल जायेंगे, लिपि ही हमारी संपत्ति है

अले होनको होनङ हसा लेका ले चबाचना होनङ
सरि–सरि गुरू को मेतामा दोरोम गुरू
अमः कुमु कोको पुराः एया मनामि होड़ो को।

बिनोद सिरका (पोद दुरंग जुमुर–कोल्हान सकम)

10. उटइ में

तला सिंगी जोका ने हो। उटइ में
तलं होम्मो जोका नेन हो। रूकइ में
नेन हो गितिः एड़ाः आकना
सेनः चन तेयः सरिगे, काः ए चिरगल लड़्ते कुमु तनाः ए
तलं चेणे, लुतुर रे काकलाइ में।
तला सिंगि जोका ने हो 'उटइ' में
सोमय रे उठइ में, कारेदो सोमय रे काः ए उटाना
ओण्डोः तयोम बागेयड् को, पांजा नमतन रे
होरो बोरोः ते निरेया नाः ए
होरो बोरोः निनिर तनगा कजि तना
मेनदो इनिः गे हतेअ निः को मेमाइया
ओकोय सोमय तइन लोः ते सपाड़वा कनोः वा
तलं सिंगि, नेन हो उटइ में
तलं चेणे, लुतुर रे काकलाइ में।

सुधीर पाट पिंगुवा (पोद दुरङ जुमुर–कोल्हान सकम)

इस लिपि की खोज अगर आप नहीं किये होते
हम बच्चे मिट्टी की तरह समाप्त हो जाते
सचमुच में आप गुरू हैं, इसलिए आप को धर्म गुरू को धर्म गुरू भी हैं
आप का सपना पूर्ण करेंगे लोग।

10. उठाओ

दोपहर होने वाली है! उठाओ
दोस्त! उसके शरीर को! हिलाओ
ये व्यक्ति बेसुध सोया हुआ है
इसे मालूम ही नहीं चला कि सपना देख रहा है।
हे! चिड़ियां दोस्त इसके कान में आवाज करो।
दोपहर तक इस व्यक्ति को उठाना पड़ता है
समय पर उठायें
बाद में पीछे वालों को ढूंढ़ना पड़ता है
हड़बड़ी में दौड़ता है
हड़बड़ी में दौड़ना अलग बात है
जो समय रहते तैयार हो जाता है
दोपहर होने वाली है! उठाओ
हे! चिड़ियां दोस्त इसके कान में आवाज करो।

11. होरा बर : रेया : सेंया

केड़े तम हरता रे, गड़ि बुगिते सबम ब्रेक
बनते रेदो होमो रेय:,
कोंजा को होबाओअ: तम क्रेक।।
टोपोकोर यन रे, सेनोअ: तम् गोनोङ जिबोन
एना मेन्ते हरता रे गड़ि, ताइन में सावधान।।
हुजु सेना-तन रे, बुगिन अञ ओण्डो: अम्
जुदि रिकेयम
यातायात रेया: नियम।।
होबाओअ करब दिन, गड़ि केडे: ते हर तेया
सोमय अउरि तेगे,
ओते लतर बेटाय तेया।।
होरा सेनता रे, कम ताइन होसियर अम्
रपुडो: अ जङ,
उडुयम जिएम।।
होरा बर सेनता रे, आयर पा: ते लेलेम् मेड
बनते ओअ: बेरय,
अयेर तेम तुन्डु: य सएड।।
एनामेन्ते कबु जोरो इचि: ए
होमो रेय: मयोम, तिसिङ ते कबु रपुडेया
यातायात रेय: नियम।।

बिरसिंह बुड़ीउली (पोद दुरङ जुमुर)

11. सड़क के नियम

तेज गति में चलाते वक्त
गाड़ी का ब्रेक ठीक से पकड़ें
नहीं तो तुम्हारे शरीर का
जोड़-जोड़ हड्डी में होगा ब्रेक।
आपस में टकरा जाने पर
तुम्हारा कीमती जिंदगी जा भी सकती है
इसलिए गाड़ी चलाते समय रहें सावधान।।
आते-जाते समय तुम भी ठीक रहोगे और मैं भी
यदि सावधानी से यातायात का
नियम करोगे पालन
गाड़ी तेज चलाने से
समय से पहले
मिट्टी में मिल जाओगे।।
राह में चलते समय
अगर होशियार नहीं रहोगे
हड्डी टूट जाएगी
याद रखोगी नानी।।
सड़क में चलते वक्त हमेशा
अपनी आंखों से आगे ही देखना।
कहीं पहले ही सांस न रूक जाए।
इसलिए टपकने नहीं देंगे
शरीर का खून
आज से नहीं तोड़ेंगे
यातायात का नियम।

12. जोनाम हसः

अबुआ जोनोम हसः कजि तनः ए
चेनः होन को पे बोरोते तना
अपे दो अञः कुला होन को
बुरू अयते पे ओल्ल कना।
चेनः को होनपे एरेलो तना
एसेल तः हेन्दे बेरेल तना
अपेयः पेः ते होनको दिसुम असकल तना
अयड्-टयड् बंदि य कना हेन्दे सोना।
उलिदः अ पा कोरे जोरो एड़ः तना।
साबेन अबुआ बुडेः ए दरूः अ जो को लोड़ो तना
अबुआ नइल ओ प रिङ यना
होनको बुडओ तनाः पुंजि अबुआ।
एला-एला होन को हुजु रूआ पे
पा कोरे पे उम्बुल तीपा कना
बन्चओ ए पे नेपा
अब ओअः हातु तालोब तना।

सागर पाट पिंगुवा
(कोल्हान सकम-पोद दुरङ जुमुर)

12. हमारी जन्म भूमि

हमारी जन्म भूमि बोल रही है
बच्चे तुम लोग डर रहे हो! क्या
तुमलोग मेरे शेर, के बच्चे हो
जंगल से निकले हो
बच्चे तुमलोग ईर्ष्या कर रहे हो ! क्या
तुम्हारा शक्ति से ही देश उजाला हो रहा है
जगह–जगह मोड़ा बांधा हुआ है, काला सोना का ढेर है।
मुँह से लार चू रहा है।
सभी हमारे पेड़ के फलों के इंतजार में है
हमारा घर–द्वार–हल, भूल रहे हैं
बच्चे न हो रहे हैं, भविष्य हमारा है।
आओ–आओ बच्चे वापस आ जाओ
छाया हुआ है।
इधर बचायें
हमारा घर–द्वार ढह रहा हैं।

13. तोरङ नेकागे अदाओः अ, नमा–नमा अपा सराय रे

गमा लेड़ाः ए रिबि–रिबि
हेसा मता–मता लेना
हेसा दरू रे चेणे को चेरो–बेरो
अमः सनङ अञः जिबोन।
    अमः असरा अञः रिङ दइया
    अमः उम्बुल कञ बगे दइया
    तोरङ नेकागे अदाओः अ
    नमा–नमा अपासरोय रे।
रबङ दिपिलङ बलेः जेटे
जेटे दिपिलङ दरू उम्बुल
एस्कर रेयोः लांदा लांदाए
एस्कर रेयोः सुसुन–दुरङ।
    होरा कोरे नपम यनरे
    नेपेल मुतिड, गिसिर–गमङ
    तोरं नेकोगे अदाओः अ
    नमा–नाम अपसराए रे।
मोचम् गेरमाए–गेरमाए
सेन ता रे चेमेर–चेमेर
अदाओः अ जिबोन
मलि बा ते गालंमे तन लेका।
    जेटे उम्बुल रे दुबाकन रे
    जःतः अं, उडु रे अमः गे हुजअ
    तोरङ नेकागे अदाओः अ
    नमा–नमा अपासराए रे।

13. शायद ऐसा ही लगता होगा, नया–नया प्रेम होने पर

झिम–झिम बारिस हो रही है
पीपल पक गया
पीपल पेड़ में बैठे चिड़ियों की आवाज आ रही है
तुम्हारी पसंद, मेरी जिंदगी
तुम्हारी आशा, मैं कभी न भूल सकता
तुम्हारी छाया को कभी न छोड़ सकता
शायद ऐसा ही लगता होगा
नया–नया प्रेम होने पर।
ठंड के मौसम के गुलाबी ठंड
गर्मी में पेड़ के नीचे
तुम अकेले ही मुस्कुरा रही हो
तुम अकेले ही नाच गान कर रही हो
बीच राह में भेंट मुलाकात होने पर
जब देखूं तब शरीर में सिहरन होती
शायद ऐसा ही लगता होगा
नया–नया प्रेम होने पर
तुम्हारा मुस्कुराता चेहरा
चलती हो तो छम–छम आवाज आती है
ऐसा महसूस होता है दिल में
ऐसा लगता है बेली फूल की चुभन
धूप–छांव में बैठे होने पर
कहीं भी कभी सोचता हूं, तो तुम्हारी ही याद आती है
शायद ऐसा ही लगता होगा
नया–नया प्रेम होने पर

सल बबा लेका किदोर–कोदोर
मलि बड़ा लेका मुतुड सोड़ान
सुसुन दुरं रे, गेलड–गेपेल रे।
    कुमु को तेयो कञ उडु लेडा
    तइयु ते होबाओः अ अमः बेगर
    तोरङ नेकागे अदाओः अ
    नमा–नमा अपासराए रे।
तिड़िम रिपिड–रिपिडया
मेडेम इंगुल–इंगुलेया
कच्चिम बोरोए तन
हो को लेल तन
    अञ इंगुल नमकेः ते
    निर हजुः मे गोटा दिसुम बगे तुआः एते
    तोरङ नेका गे अदाओः अ
    नमा–नमा अपासराए रे।
जुमुर तला रे एस्कर गे दुबाकन
चेनम् उडु तना हपा–हपा तेम गेरमोए तन
जिबोन बितर रे अकुल–बाकुल
मोन–मोन तेम लांदाए तन
    समा रे अलोम गेरमाए–लांदाए
    हो को लेल तन, बाया तनए को मेतामे
    तोरङ नेका गे अदाओः अ
    नमा–नमा अपासाए रे।

घनश्याम बोदरा (पोद दुरङ जुमुर)

खेत के धान के समान लहक रहे हो
बेली फूल की तरह खुशबू तुम्हारी
नाच गान में, चहल कदमी में।
　　　　सपना में सोचा भी न था
　　　　रहना पड़ेगा तुम्हारे बिना
　　　　शायद ऐसा ही लगता होगा
　　　　नया-नया प्रेम होने पर
हाथों से इशारा कर रही हो
आंखों से इशारा कर रही हो
तुम्हें डर नहीं लगता
लोग तुझे देख रहे हैं।
　　　　मेरा इशारा मिलते ही
　　　　दौड़कर चले आओ, समस्त ब्रहमाण्ड
　　　　शायद ऐसा ही लगता होगा
　　　　नया-नया प्रेम होने से।
महफिल में अकेला बैठा हुआ
क्या सोच रही हो, छुप-छुप कर मुस्कुरा रही हो
दिल के अंदर हलचल मच रहा है।
मन ही मन मुस्कुरा रही हो।
　　　　बेवजह मत मुस्कुराना
　　　　लोग तुझे देख रहे हैं, लोग तुझे पागल समझ बैठे हैं
　　　　शायद ऐसा ही लगता होगा
　　　　नया-नया प्रेम होने से।

14. पोनाई चन्डुः तरल लेका

पोनाई चुन्डु तरल लेका
पुटाव बड़ा जुंगुड लेका
एन लेका दटम् तरल जो आम जुंगुड।
मुलु चन्डु बनोअः मरसल
गोसो बड़ा बनोअ, सोड़न
सोमय अमा चबा तना चिरगल बनोअ।
पोनाइ चन्डु सेनो लेका
पुटव बड़ा गोसो लेका
सोमय अमः ओटङ तना होयते चेतनते।
समोम लेकन सोमय नेना
का 'गे हेरोमे जोरोङ जकेड्
होयो सङते मुङि जुडिल जिबोन कोयोङते।
सिदा दोलङ जुड़ि केना
पइले दोलङ गति केना
मियड चरिः बड़ा गेलङ बड़ा हटिङ कना
अयर चनब चिरगले मे
ओलड् मेयाएः प्रेम सेंगेल
सिदा जुड़िम अलोम बगेः इ प्रेम होरा रे
अयर जुड़ि बगेः ए किः रे
सिदा जुड़ि बगुड़ि किः रे
चनब सोमय कोरे प्रेमी दुकु 'म नामेया?

14. पूर्णिमा की उजली रात

पूर्णिमा की उजली रात
खिली हुई फूल के समान
ठीक उसी तरह दांत उजली, गाल की लालिमा।
पूर्णिमा की रात में उजाला नहीं है
मुरझाई फूल में खुशबू नहीं है।
समय तुम्हारा खत्म हो रहा है, तुम्हे मालूम नहीं।
पूर्णिमा की रात गुजर जाने के बाद
खिला फूल मुरझा जाने के बाद।
समय तुम्हारा हवा के साथ ऊपर बहती चली जा रही।
सोने जैसी कीमती समय
जिंदगी भर संभाल के न रख पाओगे।
हवा के साथ एक दिन जिंदगी चली जाएगी।
पहले हम दोस्त थे
पहले हम संगी थे
एक ही तिनका में गूंथे फूल को ही बांटते थे।
आगे पीछे महसूस करें
लिख दिये हैं प्रेम भरी खत में
मेरे दोस्त! मुझे न छोड़ प्रेम की राह में।
पहले वाले दोस्त को भले छोड़ दिये हो
पहले वाले मित्र भले छूट गये हो
अंतिम वक्त में प्रेमी, दुख तुझे मिलेगा?

रविकुमार डांगिल (कोल्हान सकम-पोद दुरङ जुमुर)

15. सनिङ रेन कुपुल

हपाते जाः तअः रे
आम दो ओमा कना
मेण्डो कुमु
अञ दोञ लेलाडा।

होला अयुब पङ
एस्कर दुबा कनते
अमः लगिडेञ
उडु तडा।

हसुर तन सिंगि
तुरोः तन चडु
अम लगिङ् जगर दोञ
कुल तडा।

ओरङ तन होयो
लिंगि तन दः अ रे
अमगे नुतुम दो
ओला कना

सिरमा रे गुड़गुड़उञ नेलेरे
अमः गेर–मोञ–लान्दा तन
मेड् मुटय लेलामेया।

जपः अ रिनिः इ रेयो, चि
सनिङ रेनि रेयो
जनिइ रेयो
मेण्डो कुपुल दो बइया कना।

घनश्याम बोदरा (कोल्हान सकम–पोद दुरंग जुमुर)

15. दूर का मेहमान

चुपचाप कहीं पर
रखा हुआ है
एक सपना
मैं जो देखा था।
कल शाम
अकेले बैठकर
तुम्हारे लिए
सोचा था।
डूबते हुए सूरज
उगते हुए चंद्रमा
तुम्हारे लिए इन लोगों के माध्यम से खबर भेजा हूं।
हवा की झोंके से
पानी के झरने से
तुम्हारा ही नाम
निकलता है।
आकाश की कड़कड़ाहट
तुम्हारी मीठी मुस्कान
हमेशा मुझे दिखाई पड़ता है।
पास का हो या
दूर का हो
कोई भी
एक मेहमान तो बना है।

16. सनङ सेसा अमः सनङ

बुगिन होड़ोम बइन सनङ
सबिन कोलो:म जुड़िन सनङ
जुड़िन रेयोम कमः रेयो,
समङ सेसा अमः सनङ।।

    जिबोन अमः चिनः ए सनङ
    अमगे सलय अमः सनङ
    समय रेयोम कमः रेयो,
    स्नङ सेसा अमः सनङ।।

चिमिन गुन तेमः तोरङ
एटः कोरेयो मेनः चि तोरङ
मेनः रेयो बनोः रेयो,
सनङ सेसा अमः सनङ।।

    अमः गुन लेका तोरङ
    एटः कोरेयो मेनः चि तोरङ
    मेनः रेयो बनोः रेयो,
    सनङ सेसा अमः सनङ।।

सिबिल नोगोडेम सलय सनङ
मुतुड् बाड़ाम सोड़न सनङ
सलय रेयोम कमः रेयोः,
सनङ सेसा अमः सनङ।।

    अमः होरा रे अमगे सुमङ
    ओकोय बंको अमः सनानङ
    मेनः को रेयो बंको रेयो,
    सनङ सेसा अमः सनङ।।

अमः जिबोन चिमिन मरङ
ओंकोन जोका सेसेन तोरङ

16. आपकी मंजिल – आपकी चाहत

भला इंसान बनने की चाहत,
सबों के साथ मित्रता
आपकी इच्छा पर निर्भर करता है।

आपकी आत्मा की
क्या चाह है चुनना न
चुनना यह आप पर
निर्भर करता है।

आपके अंदर कितने गुण हैं
आप अपने गुणों को
किसी को बाटेंगे या नहीं
यह आपकी इच्छा पर निर्भर है।

आपके गुणों की तरह
दूसरे लोगों में वे गुण हो
इससे आपको क्या?
आपकी मंजिल आपकी चाहत है।

जायकेदार भोजन
एवं खुशबूदार वस्तुओं
का चयन आपकी
इच्छा पर निर्भर है।

आप की राह में आप
अकेले हैं, दूसरा कोई नहीं है
आपकी मंजिल आपकी चाहत है।

आपका जीवन कितना बड़ा है
इसका सफर कहां तक है
उस पर चलना या चलाना

सेने रेयोम कमः रेयो,
सनङ सेसा अमः सनङ।।
    उड़ि जिबोन जोरोङ
    सिञ बोंगा आंदे ओड़ोङ
    सेने रेयोम कमः रेयो,
    सनङ सेसा अमः सनङ।।
बाड़ा पुटाओ यन रे तोरङ
कचि को दुरडें उरू को तोरङ
अयुमे रेयोम कमः रेयो,
सनङ सेसा अमः सनङ।।
    जिबोन गोनोःए राः गेरङ
    सिंगि डुबुःइ' हासुर दनङ
    सुकुन रेयो'म दुकुन रेयो,
    सनङ सेसा अमः सनङ।।
हुजुः लेनः सेनोः दनङ
सोमाय चिमिन हियातिङ सनङ
हियातिङ रेयो'म कमः रेयो,
सनङ सेसा अमः सनङ।।
    उंकुडु ताःअ्म कटा चडङ
    कचि नेलोः पइटि होनङ
    सेने रेयो'म कमः रेयो,
    सनङ सेसा अमः सनङ।।

डोबरो बुड़िउली

आप पर निर्भर करता है।

जीवन की इस परिस्थितियों
में भगवान का जो आदेश
होगा उस पर चलना या चलाना
आपके चाहत पर निर्भर करता है।

फूलों के खिलने पर
भौरों के गीत सुनना
न सुनाना आपकी
चाहत पर निर्भर करता है।

जीवन का जाना सूर्यास्त
के समान है, ऐसी स्थिति
में आप खुशी मनाएंगे या शोक
यह आप की चाहत पर निर्भर है।

जो आया है, वह जाएगा,
समय कितना बलवान
इसकी बलिष्ठता को आप
माने या न माने आप पर निर्भर करता है।

रचनात्मक कार्य के लिए
कदम बढ़ाना होगा, कदम
बढ़ाने से ही काम दिखाई देगा,
इस पर चलना न चलना आप पर निर्भर करता है।

17. होय्यो गमा

होय्यो गमा दो बुगि गेया
जोम नुइ दो ललि गेया
    चिमिन बुगिन दिसुम रेबु जोनामअ कना।
गड़ा कोते जंगिया मन
बुरू कोते बइइयामन
    चिमिन बुगिन दिसुम रेबु जोनामअ कना।
निरे-निरे मेया होरो लिपा लड़ि
सेने–सेने मेया कुलय चुड्डु–चुड्डु
    डं–डं बुरू दोको संगर तड़ा
    राजा को बंदेला दोको हेलो तडा।

पूर्णचन्द्र बिरुवा

18. रूमुल केन बिरसा

झारखण्ड दिसुम रूमुल: रेना: बिरसा
चालकन्ड हातु रेए जोनाम लेना बिरसा
डोंगोल रे – सेयां लेना बिरसा
साईल रकब बुरू रे – ए मरङ लेना बिरसा।
सर आ: सर जोतोन केन बिरसा
दिकु सरा:अ को असेन केन बिरसा
एसेल सायोब को: सुसुन केन बिरसा
डोम्बारि बुरू गोटा रूमुल केन बिरसा
बले: सेपेड दिपिलङ
गोजो गोपोज लड़ाई केन बिरसा।
बुरू चेतन अखड़ा कोरे: जगर लेडाय बिरसा

17. हवा पानी

हवा पानी का समय अच्छा रहा,
खाने पीने की वस्तु इफरात है
कितना सुंदर देश में हमने जन्म लिया।
गांव, नदियों से जुड़ी है
गांव पहाड़ पर्वतों से घिरी पड़ी है।
कितना सुंदर देश में हमने जन्म लिया।
आओ जल्दी दौड़ो पीछे वाले, कछुवा की चाल में मत आना
आओ जल्दी चलें खरगोश की चाल में चलें।
वीरान जंगल का शिकार किया जा रहा
राजा के तालाब का पानी सुखाया जा रहा।

18. तहलका मचाने वाले बिरसा

झारखण्ड में तहलका मचाने वाले बिरसा
चालकद गांव में जन्म लिये बिरसा
चाईबासा में शिक्षा दीक्षा प्राप्त करने वाले बिरसा
घने बीहड़ जंगल में बड़े हुए थे बिरसा।
तीन धनुष रखने वाले बिरसा
दिकुओं को नचाने वाले बिरसा
अंग्रेजों को नाच नचाने वाले बिरसा
डुम्बारी जंगल के समस्त इलाके में तहलका मचाने वाले बिरसा
नौजवान, यौवन के समय
जीने मरने का लड़ाई लड़ने वाले बिरसा
पहाड़ के ऊपर एवं अखड़ा में सभा करने वाले बिरसा।
आदिवासी भाईयों! एवं बहनों

आदिवासी हगा मिसि को:
सर-आ: सर अलोबु बगेया:
सर अ: सर बागेयन रे
माइल टुटि पोचाज़न रे, ओते हसा को: तञ बुआ
बुरू तोन्डाग को एसेर बुआ
ओते हसा हरदु केन बिरसा
एसेल सायोब को लो: ओपोता केन बिरसा,
नेय: गे जगार लेडा, नेय: गे इंगुल लेडा
आदिवासी हगा को:
सर आ: सर आलोबु पोचाएया।
किलि मिलि किलि तेन आदिवासी को:
किलि मिलि बोंगा बुरू
मनातिङ आदिवासी को
जुड़िना बु-जुपुड़ियाबु-हुदा: इङिगेया:।
बिरसा आबा चुन्डुल तड होरा ते
बिरसा आबा उदुब तड हाटियाते
एला दोला - हपार सपाब बु निरेजा सेनेया।

घनश्याम गागराई, साभार (अखड़ा)

19. जिबनान बाड़ा

अमगे नेले-नेले ते
अमगे तोंगि-तोंगि ते
निरेयन निदा तयोम रे
    बालेय मुलु: होड़मो तेम
    बड़ा रेदो पुटाव तेम
    सुड़ा संगेन कोतो रेम
    तुरेचन आड़ने इपिल।
सबानम हितड हाटिङ जुड़िञ

तीर धनुष हम कभी न छोड़ेंगे
तीन छूटने पर जमीन जायदाद हमारी
छिन सकती है।
पहाड़ पर्वत छीन सकता है
जमीन जायदाद को सुरक्षा करने वाले बिरसा
अंग्रेजों के साथ लड़ने वाले बिरसा
यही संदेश दिये थे, यही इशारा किये थे
आदिवासी भाईयो! बहनों
तीर धनुष कभी न छोड़ो
विभिन्न गोत्र वाले आदिवासी बंधु
विभिन्न प्रकार के त्योहार मनाने वाले आदिवासी
दोस्त बनेंगे हम एक दूसरे को दोस्त बनाएंगे
बिरसा आबा के दिखाये गये राह में चलेंगे
बिरसा आबा के दिखाये गये सड़क में चलेंगे
आओ! चलें एक दूसरे के साथ चलें।

19. जीवित फूल

तुम्हीं को देख-देखकर
तुम्हारी राह देख-देखकर
रात गुजर गई
सुबह! सुबह होने पर दिखने वाले तारे भी दिखाई पड़ा
पूर्णिमा की चांद की तरह तुम्हारा बदन
फूल होती तो खिल गयी
कोमल पत्ते के डाल हो तुम
सुबह के तारे के समान
तुम्हारे हाथों में मेरे दोस्त
जीवित फूल तुम्हारे हाथों में

जिबोन न बाड़ा तिड़ि रे
गलंयम हिसिर हिसिर रे
जुड़िञ सितु–इतुं उम्बुल रे।
    निरेयन चन्डु मुलुयन तयोम,
    ओड़ा के इदेङ रे
    सपारूम सिसिर दः रे
    सपारूम सिसिर दः रे ते गितिल,
    होड़ोमो पोवा बनाइ रे – अमगे नेले ....।
लादी बादि लबादि जुड़ि
तिड़ि रे सबन बनम, रूतु,
बाड़ा – बाड़ा अपिरेन लेल,
दुमुर हुरूम सुकु ......
सदाय जिबोन, अमला : सोंगे।

मदन बानरा

20. एतो एपेतो ठेपर होरा

दिशुम ताबु बोदोलन तना
दःअ गमा रिंगा बु तना
मरा हगा मिसि कोबु बेपर एतोना
    बुरू दरू ओटंग्प्येन तना
    आते हासा सबःअ तान
    हो जाति आदिवासी बु बेगार कना
नला नोकारि एतो नाबु
ज्ञान मरसल होरा तेबु
हो जाति आदिवासी मर बु एतेतो
    दिकु पटाणा चकड बु तन
    डियंग अरकि लबुःउ तन
    दिकु पटाणा अरकि डियंग रे

गूंथना तुम हार माला
मेरे दोस्त!
अमावस्या के बाद
घर के अंदर
शीत का पानी, बालू के ऊपर शीत की तरह
कोमांलंगिनी शरीर में तुम ही दिखती हो
हे दोस्त! हे सखा
हाथ में बांसुरी और सारंगी लिए
इस फूल से उस फूल उड़ने वाले
मधुमक्खी ....इधर उधर भटक रही है।

20. सीखने वाली राह

देश हमारा बदल रहा
पानी का अकाल पड़ रहा
भाई एवं बहनों आओ व्यापार करना सीखें।
जंगल झाड़ खत्म हो चला
जगह जमीन बंजर हो चला
हो जाति, आदिवासी बंधु बेकार हो गये
नौकरी करना सीखेंगे
ज्ञान और उजाला की राह में चलेंगे
हो जाति, आदिवासी बंधु आओ एक दूसरे को सिखायें।
बाहरी लोग हमें ठग रहे हैं
हंड़िया दारू में ठगा गये हैं, हम
बाहरी लोग के हड़िया दारू में।
अपने को क्यों ठगायें
घृणा एवं सताये होना छोड़े

कबु चकड डेन
हिला चेन्टा बगेयाबु
मोलोङ सेरोम केड़े:ए याबु
जोजो मड्कम बारू डोला बु बेपार एतोना
गियु गमं बगेयाबु
दो या दारोम बगेयाबु
हाटो बजर डोंगोल कोरे बेपार एतोना।
पोरोब होनोर बगेयाबु
अरकि डियंग बगेयाबु
होन गणा उन्डि बोको मर बु एतोकोवा
रूपुउ तपम काबुआ
देरं चोलं काबु आ युम
हगा दुकु हातु देंगा मरबु गति ना
अलिञ ओनोल हेस्सा योगेश
हातु तालिञ बेड़ा मुंडुइ
हो जाति आदिवासी मरबु मरसलेया!

योगेश्वर हेस्सा, साभार (आरसी)

21. पेरेम बाड़ा चुइलम नेमाञ

सिटिया कोरेम कजि लेडिञम
डुला कोरेम जगर लेडिञम
पेरेम जुड़ि बाड़ा दो चम्पु चुइलम नेमञ।
हरा जनम दरू जनम
पेरेम जुड़ि बाड़ा दो चम्पु
पेरेम जुड़ि बाड़ा दो चम्पु चुइलम् नेमञ।
तुरतुंग सिंगि नसुर जन

अपना दिल दिमाग को मज़बूत करें
इमली, मडुआ, कुसुम एवं डोरी का व्यापार करना सीखेंगे।
लाज शर्म छोड़कर, दया धर्म छोड़कर
हाट बाजार एवं चाईबासा शहर में व्यापार करना सीखेंगे।
पर्व त्योहार में घूमना छोडेंगे
हड़िया दारू पीना छोड़ेंगे
भाई बहिन आओ बाल बच्चों को सिखायेंगे
मार पीट से दूर रहें
दूसरों की झूठी बातों को ध्यान न दें
भाईयाद का सुख दुख में साथ रहेंगे
हमारा नाम योगेश है, गांव है बेड़ा मुन्डुइ
हो जाति आदिवासी बंधु
आओ उजाला की राह पर चलें।

21. प्रेम के फूल कब देगी

बचपन में तुम बोली थी
शिशु अवस्था में तुम बोली थी
प्रेम का फूल तो चम्पु कब दोगी
बड़ी हो गई, जवान हो गई
प्रेम का फूल तो चम्पु
प्रेम का फूल तो चम्पु कब देगी।
चमकता सूर्य अस्त हो चला
पूर्णिमा की रात चली गई
बचपन में किये गये प्रेम की बातें कब पूरा करोगी।
रास्ते के धूल में खेलने का समय
पेड़ के नीचे छाया में खेलने का समय

पोनाइ चन्डु निर जन
सिटिया–डुला पेरेम जगर चुइलम पुराए:।
    होरा डुलिड इनिंग सोमय
    दरू सुबा रेय: सोमय (उम्बुल)
    सिटिया – डुला पेरेम जगर चुइलम पुराए:।
जिबोन रेलं गुतु लेड
मोन रेलं गलं लेड
पेरेम जुड़ि बाड़ा दो चम्पु चुइलम पुराए:।
    बले: बले सोमय रेगे, पकोड़ो–पकोड़ो होम्मो रेगे
    सिटिया – डुला कजि जगर कजि पुरायमेय।
सिसिर गमा जिपिर कोरे, चन्डु नुबा तेते कोरे
कजि जगर पुराय लगिड नोतेम तिरूबेय
    नोतेम तिरूबे रेयो चम्पु, कजिम उकु दनं रेयो चम्पु
    जुमुंड जोरोङ कोरे चम्पु उडु बेटाय:

कमल लोचन कोड़ाह "हो"

22. एलाबु सागोम

दुलड़ हगा बइ को सबिन
दुलड़ हगा मिसि को सबिन
हो हयम् हितड् सनागोम एलाबु सागोमे।
    शोब्दो संडि़ सजावाकन
    सारिगे सडि़ सिंगराकन
    हो हयम हितड् सनागोम एलाबु सगोमे!!
हतङ पेरे: ए अतङ सनङ
मोलोङ पेरे:ए सोलोङ सनङ
हो हयम हितड् सनागोम एलाबु सगोमे!!
    सृजोन मुतिड सारूबाकन
    मुडू मुतुड् सारूबाकन

बचपन में किये गये प्रेम की बातें कब पूरा करोगी।
जिंदगी साथ जीने के लिए गये वचन
मन के मंदिर में गूंथे गये वादे को
प्रेम का फूल देने का वादा कब पूरा करोगी चम्पु।
बाल्य अवस्था के समय में
नवयौवन के समय में
बाल्य अवस्था में किये गये वादे को कब पूरा करोगी
लगातार हो रही बारिस में
बादल भरी, चांदनी रात में
उस वादे को निभाने के लिए तुम अपना सर क्यों झुकायी हो
चाहे तुम सर झुकाव चम्पु
चाहे तुम अपनी बात छुपाओ चम्पु
किसी न किसी दिन तुम्हारे दिल में एक ये बात जरूर आएगी।

22. आओ एकत्र होवें

प्यारे भाईयों, आप सभी
प्यारी बहनें, आप सभी
हो–भाषा को आओ संवारे और सजायें
शब्दों की आवाज सजी हुई
सचमुच आवाज श्रृंगार हुआ है
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
अंजुलि भर से ज्यादा दिमाग
दिमाग में भरी पड़ी है बुद्धि
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
प्रति व्यक्ति में समाहित
हर व्यक्ति में समाहित

हो हयम हितड् सनागोम एलाबु सगोमे!!
रचा सोमन नितिराकन
रचा सोमन तासिराकन
हो हयम हितड् सनागोम एलाबु सगोमे!!
हलङ गलङ इनुङ लेका
एन्डेल तुसङ इनुङ लेका
हो हयम् हितड सनागोम एलाबु सगोमे!!
सिंगि लय: लय: रेयो
निदा रूबुङ रूबुङ रेयो
हो हयम हितड् सनागोम एलाबु सागोमे!!
कलगि मंडि पोड़ोमा कयते
रेंगे रबंङ चिपुडा कयते
हो हयम हितड् सनागोम एलाबु सागोमे!!
जुड़ि गति इनुङ–इनुङ लेका
लंदय बेलेङ इनुङ लेका
हो हयम हितड् सनागोम एलाबु सागोमे!!
सेनगे सुसुन इनुङ लेका
कजिगे दुरंङ इनुङ लेका
हो–हयम् हितड सनागोम एलाबु सागोमे!!
दिसुम गोटा रूमुलेयाबु
रइज तला तमिलेयाबु
हो हयम् हितड् सनागोम एलाबु सागोमे!!
सेंया मरसल अरसि ताबु
हुदा बरेड् परचि ताबु
सोय सयोब हितड् सनागोम एलाबु सागोमे!!

डॉ. जानुम सिंह सोय
(कोल्हान सकम)

हो भाषा को आओ संवारे और सजायें
आंगन के बराबर भरा पड़ा है
आंगन के समान भरा पड़ा है
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
उठाये, चुनें बिछे खेलें
चुमें और खेलें
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
सूर्य की तेज रोशनी हो
रात की काली रात में भी
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
पोटली में भात बाँध कर
भूखे प्यासे सिकुड़न भरी ठंड में भी
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
खेल-खेल में संग लगने जैसे दोस्त
मुस्कुराते हुए, शरारती के साथ में भी
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
चाल ही नृत्य है, खेल की तरह
बोलना ही गीत है, खेल की तरह
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
समस्त देश को हिलाते हुए
समस्त राज्य को डुलाते हुए भी
हो भाषा को आओ संवारे और सजायें।
ज्ञान की उजली दर्पण हो
समाज को शिक्षित करते हुए भी
सोय साहब, आओ संवारे और सजायें।

23. आलोपे गितिः आ

आबुअः झारखण्ड रे आबुअः गे राज का चलावे तना
नेया चिलिकन झारखण्ड तना?
आबुअः ओअः रे अबुगे मंडि कबु नमे तना
एन रेदो अम्प ओअः चिलिकन, अञः ओअः तना।
आबुअः हातु रे आबुअः क्षिति लिपि का चलाओ तना।
ने आबुअः हातु रे तिसिंग चेनः होबाओ तना।
आबुअः हातु दिसुम रे
अबुगे आबुअः 'हो' ते काबु जगरे रेदो
ओकोयो 'हो' ते जगारेया
नाःगे उटानाबु आबु सबिन हो को
आबु सबिन हो को
बन्ते रेदो आबुअः मंडि
एटः को रेः बुआ
जोका गिति सनङ तन रेयो
आलोपे गितिया
बन्ते रेदो आबु को तेना गोयः बुआ को
चेनः मेन्ते चि
अबुआ दिसुम रे नेलकन दिकु को मेनाः कोआ।

राजु डांगिल
(कोल्हान सकम)

23. मत सो

हमारा झारखण्ड में, हमारा ही राज्य नहीं चला
ये, कैसा राज्य है!
हमारा घर में हमें ही भोजन नहीं मिलता
तब हमारा घर, कैसा घर है!
　　हमारा गांव में, हमारा क्षिति हमारा लिपि नहीं चला
　　हमारा गांव में आज क्या हो रहा है।
हमारा गांव, हमारा राज्य
हम ही हमारी भाषा 'हो' का उपयोग नहीं करते
कौन बात करेगा 'हो' भाषा में।
　　अभी ही जगें, हम सब लोग
　　नहीं तो हमारा भोजन
　　कोई दूसरे छीन लेगा
　　थोड़ा सा सुस्ताने का इच्छा भी हो
　　फिर भी न सुस्तायें
　　　　नहीं तो हमें दबा कर मार दिया जाएगा
　　　　इसलिए कि
　　　　हमारा देश में इस तरह के दिकु (बाहरी)
　　　　भी निवास करते हैं।

24. हपानुम

ए ए एला हपानुम, हय हय हय ना हपानुम
जुर जुगुंड बेलाति मता तम जोआ
गेरमोञ गेरमाञ तम लंदा
जिबोन अकुल बकुल तम सुनन्दा
चरिः चरिः तम कटा
बिनिड् होड़मो हउ मयङ तम टटका
जगर तम दो मलि बड़ा मुतुड–मुतुड
दुलड़ तम दो सोड़ाअन तना झरना दः
सोड़ो सोड़ो हड़िनतना
ए ए एला हपानुम कुलिमेगे सनङ इञ
हय इय हयता हपानुम जगर मेगे सुकुञ
ए ए एला हपानुम इदु तोरंङेम जुडिञ चि
हय हय हयना हपानुम इदु तोरङ गतिञ चिम

राज डांगिल (कोल्हान सकम)

24. नवयुवत्ती

ए ए आओ युवती
हय हय हय ना युवती
टमाटर की तरह तुम्हारा गाल
मोती की तरह सफेद तुम्हारा दांत
मंद-मंद मुस्कुरा रही हो
दिल अक बक करता है गुनन्दा
पतली-पतली तुम्हारी टांगें
तुम्हारी पतली कमर देमता की तरह
तुम्हारी बात-चीत बेली फूल की
खुशबू की तरह महकी महकी
प्यार तुम्हारे प्यारे झरने की, निरल जल
की तरह बहती सी, ए ए आओ युवती,
तुझसे बाते करने को जी चाहता है
हय हय हयना युवती!

25. गोअरि तना

देला रे सिंहबोंगा, देला रे देसा उलि
गोहारि तना लिञ, अरदास तना लिञ
कोल दिसुम कुला होन कोव:
मुतुड सोड़न एंगा हयम, नितिरेन च दिसुम तला रे
चु:डेन च सिरमा रिमिल रे
रिला मला एंगा हयम लिजिञ च:, दोरेया कोचा रे
गोहारि तना लिञ संगोम ता:रे
रूमुल मेन: एंगा हयम दो
मुइ टोंटो को लेका जुमुरेन कको
सला कन हगा मिसि को
रकाबेयाबु सिविल मुतुड एंगा हयम दो।

किशन चातर
(कोल्हाम सकम)

26. उडु लेकाम

उजुड़ो तना बकइ बा को
टोटे: टोटे:, उडु तनम चेना?
तिंगे लेटे लेटे
बगड़ा तना सोतोय मुनु दोस्तुर केडे:
सेनो तनम कोते समाति पेड़े-पेड़े
का सेंगेरो चड्लोम सुसुन ससं ते
सेता:आ
का सिडेना तड़ि सिकिंणि जोरोते, मेड् द:।

प्रधान गागराई (कोल्हान सकम)

25. प्रार्थना कर रहे हैं

हे! भगवान, हे! ग्राम देवता
प्रार्थना कर रहे हैं, अरदास कर रहे हैं
सिंह देश के सिंह बच्चे
खुशबु सी महक उठी मातृभाषा
समस्त आकाश में फैल जाएं
झिलमिल मातृभाषा समुंदर में मिल जाएं
यही प्रार्थना है हमारी,
मातृभाषा का बोलबाला है।
चींटी की तरह सभी एक जगह एकत्रित होंवे
हे प्यारे भाईयो एवं बहनों
आओ सुरक्षा करें मातृभाषा का इनकी खुशबू को बचायें रखे।

26. सोचकर देखें

बाग के फूल उजड़ रहें हैं, तोड़ते-तोड़ते
क्या सोच रहे हो?
प्राचीन दस्तुर बिगड़ रहा
खाली हाथ जा रहा है, काम करने को अंगुली बजाते बजाते
कभी न सीधा होने वाला पूंछ कुत्ता का
कभी भी न टूटेगी सिकड़ी आंसू से।

27. सिंह राजा

हाय रे यनम सिंह राजा
दुमेयनम सिंह राजा
दिगि मुण्डु–पाट–कंडा पुअः नम
लेड सिंह राजा हारे यनम
सिंह आड़ा कुकुर, अयते उपन लेन
सिंह राजा डि बड़ि एपेसेर के न राजा
लोसोड् इकिर मगुर दः एपेसरे
केन राजा हारे यनम
होलोङ तुरि चंदन गोन्डाई
नो कोयः राजा हारे यनम
तेलेंग चौरा टेबो घाटी
सेरेंसिया आबुङ कपि
सकि नुतुम मेतम सरि कजि
हारे नयम
सिंकु को गागराई को दुरङ तना
सिंह राजा
सिंकु को गागराई को लंदा तना
सिंह राजा हारे यनम

प्रधान गागराई
(कोल्हान सकम)

27. सिंह राजा

हाय रे सिंह राजा
सो गये सिंह राजा
दिन के अंत पाट – किया हाथ डाल कर ढूंठा।
सिंह राजा हार गये हो
सिंह पेड़ के खोह से सृष्टि लेने वाले
सिंह राजा भूखंड क्यों लूट रहे हो
मिट्टी से सनी गहराई की पानी क्यों छीन रहे हो
हाय रे! राजा हार गये हो?

तुरी तुम चावल के आटा लगाये चंदन की टीका लगाये
कौन राजा हार गये
पहाड़ एवं चौड़ा टेबो घाटी
सेरेङसिया घाटी की तलवार चमकी
सखी तुम्हें बता रही हूं ये सच है
हार गये हो तुम
सिंकु, गागराई सभी मुस्कुरा रहे हैं।
सिंह राजा तुम हार गये हो।

28. हुदा समाज

तिड़ि रेना हुड़िङ मरङ, तिड़ि चिपुड लेकन हुदा
जिया तता को संगेन गलङ तडा
ओकोय दोबु रेंगे तना, ओकोय दोबु किसन तना
　　रेंगे रबङ हुदा नुबा रेबु, जारू नकन,
　　ओकोय दोबु दुरङ तना, ओकोय दोबु मरङ तना
हुदा तला रे सुकु–दुकु उपुजन तना
ओकोय दोबु हिला तना, ओकोय दोबु सला तना
　　हिला सला हुदा रपुड तना, सकम लेका नसरयन को
　　हसा लेका डुमंयन को
　　हुदा बनई होरा रेबु जाति मिसाको ...।

डॉ. सोनेया कुमार तियु

28. समाज

हाथ में छोटी बड़ी
हाथ में समेट लेने वाली समाज
दादा, दादी ने गूंथा
    कोई गरीब है
    कोई अमीर है
    गरीबी और भूख एकत्रित है समाज में
    कोई गीत गा रहा है, कोई ऊपर उठ रहा है
    समाज के अंदर सुख–दुख उपज रहा है
कोई घृणा कर रहा है, कोई चुन रहा है
घृणित करने वालों से समाज टूट रहा है
पत्ती की तरह झड़ने वालों
मिट्टी की तरहा गोला बनने वालों
समाज निर्माण कार्य में सब को मिलायेंगे।

29. आलोम सेनाः

आलोम सेनो: आदिवासी
चुइलाओ अलोमा दिकु दासि
कोंय तन को लेका
आलोम अतङ आसि
दुपुब होड़ो आदिवासी
मरांग बोंगा देशाउलि
नगे बिन्दि जैयरा बुड़ि
सेबा जोतोन अम: पइटि
मोलोङ सेया बनो: तेगे
बिति उरूम बनो तेगे
सेनो तनम् नाला दिशुम
रोका पोयसा नाला ते
सेनो: यन रेम: नाला दिशुम
चिकाओ अम: जोनोम दिशुम
अम: होरा रे रामा कनो: दिकु जानुम
नेका ते अडो अम: उपरूम
हयमो को अड इचिम
दोस्तुर को दासि तम्
बोंगा बुरू मान मनातिङ
उलेङ सुलेङ को तम
हिताइसा अडो तम
सोदोरि उनुरूम् मुचेडो तम
सुसुन दुरंङ दनङ अम:
अम: सुसुन अम गे कम:
अम: दिशुम रे अमगे राजा

29. मत जाओ

मत जाओ आदिवासी
कभी भी मत बनना दिकु का दासि
भिखारी की तरह, मत फैलाना अपना हाथ
हो आदिवासी
बड़ा देवता देशाउलि, नगे बिन्दि जैयरा देवी
सेवा करना तुम्हारा काम है
दिमाग में ज्ञान नहीं होने के कारण
धन-दौलत संपत्ति का जानकारी नहीं होने के कारण
जा रहे हो मजदूरी करने दूसरे देश
तत्काल मिलने वाली रूपया कमाने
अगर तुम चले जाओगे मजदूरी करने अन्य देश
क्या होगा तुम्हारा जन्म देश
तुम्हारे राह में दिकु का कंटीली तार होगी
इस तरह से खो जाएंगे तुम्हारी पहचान
तुम्हारा भाषा तुमसे भुलवा देंगे
तुम्हारा दस्तुर से दास बना देंगे
पूजा पाठ मान सम्मान
भूल जाओगे तुम
तुम्हारा इतिहास तुम भूल जाओगे
अपनी स्वच्छ पहचान तुम अस्त कर दोगे
नाच-गान भूल जाओगे तुम
तुम्हारा नाच मगर तुम ही नहीं नाचोगे
परंतु जब तुम्हें पता चलेगा तो आश्चर्य करोगे
पहाड़ पर्वत, पत्थर के तुम मालिक
भूख प्यास तो तुम्हारा ही है न

मेनदो अटकरो एना एसु टटका
दिरूि से अम गुसिया
रेङगे रबंग दो अम गे कचिया
सेंया रेचा सनागोम बिति
उरूमो रेचा टका बिति
एरेल–एपरेल ते आदिवासी
तोल इड़िङ बनो तम हुदा संगुटि
सनागोम दोस्तुर उपरूम लगिड
आदिवासी हगञ नेन आशड़ा रेगे
लमः जं लपटा लेका चोटः ओल में

जेम्स देवगम

30. अञः जिबोन सनङ

हुजु दो हुजु रूवा कना
रांसा सेनोयन र्षिमा लेका
मिसा तेलंग रांसा अलं तिसिङ
अञः जिबोन सनङ तना।

नेन बड़ा बगन तला रे
जि का रांसाओः अमः बेगर
हुजुमे अञः जपा ते
अञ जिबोन सनञ तना।।

अमा जिबोन रे अञ चुइलाव दुकु कञ ओमा मेया
अतोम चबा तअः साबेन जानुम–चोगा को अम सेन तह होरा रेया

ज्ञान रहेगा जब न अपना संपत्ति की सुरक्षा करोगे
पहचानोगे तब न अपना धन-दौलत
एक दूसरे को देखते रहोगे आदिवासी
बंधन तुम्हारा सख्त नहीं, समाज तुम्हारा संगठित नहीं है
संस्कृति और दस्तुर पहचानो अपने लिए
इतिहास स्वच्छ है भाषा के लिए
आदिवासी भाई बंधु इसी आस में
चिपटा लमः बीज की तरह से तुम निकल आओ।

30. मेरी जिंदगी की चाहत

वापस तो आया
खुशी पिछले वर्ष के समान
साथ खुशी मनाएंगे आज
मेरी जिंदगी की चाहत है।
इस बगीचा के फूल के बीच
दिल तुम्हारे बिना खुश नहीं
आओ! मेरे समीप आओ
मेरी जिंदगी की चाहत है।
तुम्हें हम कभी भी दुख नहीं देंगे
सभी कांटों को हटा देंगे हम, जिस राह में तुम चलोगे
खुशी और इच्छा से साथ चलेंगे, मंजिल तक
यदि आशा है, आवाज यदि मुझे दोगे, मेरी जिंदगी की चाहत है।
तुम्हारे चरणों के पास गिरा देंगे समस्त संसार का धन
दौड़-दौड़ कर भाग आऊंगी, तुम्हारे पास,

सुकु सनङ ते मिसा–मिसाते सेनोआ होरा तअ जोका
असरा मेनातेम इयुञय रेदो होनङ, मेनते अञ: जिबोन सनङ तना
अमा कटा सुबा रे तबाअ केयते गोटा दिसुम रेया बिति
निर–निर तेञ हुजुआ अम तअते, अम: ज़िबोन सनङ तना
चुइलम बपागे यना अञ लो, चिकाते अलंग रिपिइञ याना
अम: सोबेन दुकु को अञ नमेका, अञ: जिबोन सनंग तना
जोदि हगा–कुपुल को दुकु को ओमम रे जा मुसिंग, अरदास मेना:
मुचड् चबाव.का नेन दिसुम अयते, अञ: जिबोन सनङ तना।

घनश्याम बोदरा, आरसी

31. दुलड़ जिबोन

मिसा सरि मिसा चकड गेंञ अदाया
अम लो: जगर–जपागर रे, असरा गेंञ अदाया
पोनाइ निदा मरसल रे नेन जिबोन अमेय नमा
उडुमे तनञ निदा–सिंगि, कुमु रे निदा अमगेञ नमा।
सेन–सेपेटेर रे नेल नेपेल रे गेरमो: य गेम लंदाया
अमेञ उडु मुतिड् गिसिर गमंग गेंञ अदाया
जेटे गमा रबंग–जरगि निर बगे पारोम तना
अञ तंगि रे बा: ले जिबोन निरे बगे पारोम तना।
बले दुलड़ जिबोन हया तना
जवगे तलंग अमगे नमा
मिसा सरि मिसा चकड गेंञ अदाया
अम लो: जगर–जपागर रे असरा गेंञ अदाया
दुलड़ जिबोन मिसागे नमोवा
सोमय परोम रे गोसो–गोसो ते चबाना।

मनोज मेलगांडी (आरसी)

मेरी जिंदगी की चाहत है
कब छोड़ा मुझे, कैसे एक दूसरे को भुला दिये
तुम्हारे हिस्से के दुख मुझे ही मिले,
मेरी जिंदगी की चाहत है
यदि भाई बंधु, तुम्हें दुख देंगे,
किसी दिन यही प्रार्थना है
अंत हो जाए संसार स्वतः
मेरी जिंदगी की चाहत है।

31. प्यारी जिंदगी

कभी सही कभी गलत लगता है मुझे
तुम्हारे साथ बातें करने से, उम्मीद लगता है मुझे
पूर्णिमा की चांदनी रात में ये जिंदगी तुम्हें हो ढूंढा
सोच में पड़ा हूं रात-दिन, सपने में तुझे ही ढूंढा।
राह में मिलने पर देखने पर, मुस्कुराते हो
तुम्हें सोच कर शरीर में सिहरन सी होती है।
जाड़ा, गर्मी, बरसात एवं मूसलाधार बारिश में
छोड़कर जाना तेरा
तेरे इंतजार में मेरी जवानी, मुझे छोड़ जा रहा है।
नाजुक, प्यारी जिंदगी की चाहत
हर दिन तुझे ही चाहता है
कभी सही, कभी गलत लगता है मुझे
तुम्हारे साथ बात करने से, उम्मीद लगता है मुझे।
प्यारी सी जिंदगी एक बार ही मिलता है।
समय पार होने पर, मुरझा कर समाप्त हो जाता।

32. अबु दिसुम

दरू जिलिंग दिसुमे दो ददा
जिलिङ-जिलिङ दरू सुमेडे
बिरू बुरू दिसुमे दो ददा
बुदेड्-बुदेड् जुम्बे सुमेडे।।
बोंगा लोर दिसुम दो ददा
बिडे-बिडे बोंगा को सुमेडे
बोंगा बुरू दिसुमे दो ददा
देंवा-दियुरि सोका को सुमेडे।।
बिड-बुरू दिसुमे दो ददा
अइंल-संइल बिङ को सुमेडे
जलब-जुलुब दिसुम दो ददा
इपि-इपि इपिल को सुमेडे।।
तासो-बासो दिसुमे दो ददा
रेयड़ि-रम्बड़ा कंसरि सुमेडे
दिसुम-दिसुम नेले रेदो ददा
किलि-मिलि सेंया सुमेडे।।

सुखमती बारी

32. हमारा देश

जिस देश में पेड़ ऊंचा हो
सिर्फ ऊंची-ऊंची पेड़
जंगल पहाड़ से भरा देश, दादा
भरी पड़ी है घास-फूस से ।

देवताओं से भरा देश
देवी-देवता ही, देवी देवता
देवी-देवता से भरी देश
भरे पडे हैं, पाहन, पुजारी, वैद्य से

जंगल, पहाड़ प्रदेश दादा
सांप ही सांप
झिलमिलाती दुनिया में दादा
भरे पड़े हैं तारे ही तारे

खेती-बारी वाला देश दादा
भरे पड़े हैं, अरहड़, खेसारी, उरद
देश-प्रदेश देखने से दादा
भरे पड़े हैं विभिन्न प्रकार के ज्ञान से ।

33. अम्बारोब होन

सिरमाञ सँगिले दिदि को सुमड्
ओतेञ तिरूबे दिरि ससन गेते–गेते।
रचञ मंडाय पलि जेटे
ओकोन कोरे हय तञ सिङबोंगा कटाञ मंडाया।
जोनोम केन एंगा दो
कोयोङ के अपु दो
सोरगो रेकिङ आ चि पतल रेकिङआ।
सोरगो नेल किञ, सोरोगो बङकिञ
पतलेञ नेल किङ, पतलो बङ किञ
मोड़े मुका हसा दनङ बितर रेकिङआ।
एंगा उड्डु–उड्डु तेगे
अपु उड्डु–उड्डु तेगे
अञः जिबोन लो तन बल तना।
बोरोसो रे मड़ा मुर्दा मिसाबु नेलकड्
सिरमाञ सँगिल ले जिबोन हियातिङ
ओतेञ तिरूबे मेड दः अ जोरोए
ओकोन कोरे एगञ तोरं अञ दोञ नमिया।

आर.के.सिंकु

33. अनाथ बच्चे

आसमान की ओर सर उठाऊं तो सिर्फ गीद
सर झुकाऊं तो पत्थर एवं पंक्तिबद्ध समाधि
आंगन में कदम रखूं, तो पहली धूप
कहां रखूं हाय! ईश्वर कहां कदम रखूं।
जन्म देने वाली माता
गोद में उठाने वाले पिता
स्वर्ग में है कि पाताल में
स्वर्ग में देखूँ तो स्वर्ग में भी नहीं है
पाताल में देखूँ तो पाताल में भी नहीं है।
पांच गज जमीन के नीचे अंदर में है।
मां के बारे सोचते-सोचते
पिता के बारे सोचते-सोचते
मेरी जिंदगी जल रही है।
वर्ष में एक बार लाश देखा हूँ
आसमान की ओर देखता, जिंदगी की आस होती
सर नीचे झुकाता और आंसू बहाता।
कहां अपनी मां को मैं ढूंढूँ।

34. तोवाऊ चेणे

आतेन: तोवाऊ चेणे आम,
राअ् तान चिम दुराङ तानाम,
दुकुताना चिम सुकु तानाम
उुड़ऊगेम ककला काडाम।

कागेञ राआताना मानव: होन
कागेञ दुकुताना, मानव: होन
बाड़ा चन्डुऊ चात्रं दारोमतान
राशां–रासिका तेञ दुरांङ तान।

रायां तायोम तेञ हेआकन
दारू–दारू कोरेञ चालेनतान
सबिन दारूकोत जागारा कोतान
दुकुतायोमगे, सुकु बेटान तान।

चिलिका पान्डु पताह गासार तान
मानव–ज्ञान मार्शल रे अरूमेन मे।
नमा: सुड़ा–सागेन सागेनो: तान
आम्मा: मोलोंहो सागेने में

मानोव: एतोन में दारूकोयते
दुकु सुखु सहातिङ तेया
जागार एतोन में अजंह ते
सिबिल जागर जागारे तेया

काञा लेकाञ नेलोवाञ
मानोव: एन रेयोम रांसा तिङ
कजियाको एनागे तोराङ
रूप दो बानो, गेण गेचा बुगिन।

कुई चामी सिंकु

34. कोयल पक्षी

हे कोयल पक्षी
तुम रो रही हो या गा रही हो
तुम दुःखी हो या सुखी हो
लगता है दुखी होकर शोर मचा रही हो।
मैं नहीं रो रही हूँ हे मानव प्राणी
मुझे किसी तरह का दुख तो नहीं है
पूनम के चांद का स्वागत करने के लिए
मैं आनन्दविभोर होकर गा रही हूँ।
शरद ऋतु के बाद आई हूँ
डाल-डाल पर फुदक रही हूँ
सभी पेड़ों को संदेश दे रही हूँ
दुःख के बाद ही सुख आता है।
जिस तरह पुराने पत्ते झड़ जाते हैं, फिर नये आते हैं
हे मानव, अपने ज्ञान-प्रकाश को पहचानें
जिस तरह नये पत्ते निकलते हैं
उसी तरह अपने दिमाग का विकास करो
हे मानव प्राणी तुम पेड़ों से सबक सीखो
सुख-दुख सहन करने का
मीठी-मीठी बातें करने का
कौवा की तरह मैं दिख रही हूँ
फिर भी हे मानव तुम मुझे पसंद करते हो
इसीलिए तो लोग कहते हैं
रूप नहीं, गुण ही अच्छा है।।

35. संगि हिता

सिरजोन केनाय सिङबोंगा,
कुटि मुलि रे दुम्बु दरू,
किलि मिलि जिव-जंतु ते,
दिसुमे सिंगर तड।

उरि मेरोम चेंणे चेपोर, उरू पम्पल सबिन जिव को
जुड़ि गति पेरेम केनेहते, हिता को संगि तान।

नेलकिं तना को बोंगा बुरू को
लुकु-लुकुमि मनवा होन किङ
हिता पुंजि लगिड्, काकिंग अचुन तान।

हुजु: लेना को बोंगा बुरू को
गियु गमङ साबिन जगर
दुपुव मनोवा होन किङ को
उपन इंगुलङ किङ।

उपुड रासि रे चुकुड लेन ते, दो दो किंङ तुर केडा,
उड़ हियातिङ चनाबे किङ, मगे पोरोब लेड।

शहर होरा उदुब केन को
द: गम्मा देंगा तन को
सबिन बोंगा बुरू को किङ
सेबा ना सड़ा केड।

ना चनब अबु सबिन, लुकु-लुकुमि दोस्तुर गे
ओतोंङ पंजा मनातिं तन
मगे ना पोरोबेन तान।

बागुन बोदरा

35. अधिक बीज

जन्म देने वाले भगवान
चारो तरफ घास–पूस है
विभिन्न प्रकार के जीव–जंतुओं से
देश सजा हुआ है।
बैल बकरी चिड़ियां
भौंरा तितली सभी जीवों का
मिलजुल कर
आबादी बढ़ायेंगे।
भगवान को निहार रहे हैं।
लुकु–लुकुमि (सृष्टिकर्त्ता) मानव को
आबादी बढ़ाने के लिए।
इसके लिए आगे कदम नहीं बढ़ा रहे है।
देवी–देवताओं का आगमन हुआ
लाज शर्म की सभी बातें
बैठकी में आये मानव को
चारों दिशाओं की जानकारी दिये।
हड़िया का रस पी कर झूमने वाले दोषी ही बने
ठंडे दिमाग से सोचें विचारें, मागे पर्व मनायें।
अच्छी राह दिखाने वालों को
हवा पानी का साथ देने वालों को
सभी देवी देवताओं की, सेवा सुश्रुसा किये।
बाद में सभी लुकु–लुकुमि (सृष्टिकर्त्ता) के दस्तूर
अभी तक मनाते आ रहें हैं
मागे पर्व का त्योहार!

36. सुगड़ डहर

मरा बिरिड् मेंया हगञ
दनङ हतु रे जी गे एमेन
नवा सेतअ नवा तुरतुङ रिमिल एमेम
    नेलिम तुर लेन सिंगि
    डुबुइ हसुर इदिन तन
    हतु रेयः सुगड़ डहर दुम्बुन तन
अड कन हगा मिसि को
सेंया दान एमा कोम
सन्ति सरि प्रेम बुगिन डहर रे
    जनब बुगिन डहर रे
    हियातिङ उम्बुल तड़िन रे
    का हनाटिङ जी, रे दुरं कोरङन
जाति–पति हुडिङ मरङ
हनाटिङ तबु का गे तङिन
सबिन होड़ो मिड गंडा रे जुड़ि बु अबेन
पुटव बाड़ा नवा सेंया
नवा अङ मसकल होबन
प्यार प्रिति निति ते कमि होबन
    हर्ताहसा रे का हनाटिङ
    मियड तेग जरि होबन
    गोटा दिसुम रे मिडगे बड़ा पुटवना।

डॉ. सोनिया कुमार तियु

35. अधिक बीज

जन्म देने वाले भगवान
चारो तरफ घास-पूस है
विभिन्न प्रकार के जीव-जंतुओं से
देश सजा हुआ है।

बैल बकरी चिड़ियां
भौंरा तितली सभी जीवों का
मिलजुल कर
आबादी बढ़ायेंगे।
भगवान को निहार रहे हैं।

लुकु-लुकुमि (सृष्टिकर्त्ता) मानव को
आबादी बढ़ाने के लिए।
इसके लिए आगे कदम नहीं बढ़ा रहे है।

देवी-देवताओं का आगमन हुआ
लाज शर्म की सभी बातें
बैठकी में आये मानव को
चारों दिशाओं की जानकारी दिये।

हड़िया का रस पी कर झूमने वाले दोषी ही बने
ठंडे दिमाग से सोचें विचारें, मागे पर्व मनायें।

अच्छी राह दिखाने वालों को
हवा पानी का साथ देने वालों को
सभी देवी देवताओं की, सेवा सुश्रुसा किये।

बाद में सभी लुकु-लुकुमि (सृष्टिकर्त्ता) के दस्तूर
अभी तक मनाते आ रहें हैं
मागे पर्व का त्योहार!

36. सुगड़ डहर

मरा बिरिड् मेंया हगञ
दनङ हतु रे जी गे एमेन
नवा सेतअ नवा तुरतुङ रिमिल एमेम
नेलिम तुर लेन सिंगि
डुबुइ हसुर इदिन तन
हतु रेयः सुगड़ डहर दुम्बुन तन
अड कन हगा मिसि को
सेंया दान एमा कोम
सन्ति सरि प्रेम बुगिन डहर रे
जनब बुगिन डहर रे
हियातिङ उम्बुल तड़िन रे
का हनाटिङ जी, रे दुरं कोरङन
जाति–पति हुडिङ मरङ
हनाटिङ तबु का गे तङिन
सबिन होड़ो मिड गंडा रे जुड़ि बु अबेन
पुटव बाड़ा नवा सेंया
नवा अङ मसकल होबन
प्यार प्रिति निति ते कमि होबन
हर्ताहसा रे का हनाटिङ
मियड तेग जरि होबन
गोटा दिसुम रे मिडगे बड़ा पुटवना।

डॉ. सोनिया कुमार तियु

36. सुन्दर राहें

चलो उठो मेरे भाई
अपने गांव में अपना ध्यान लगाओ
नई सुबह, नई चमक, आकाश दे दो।
देखो! उगता हुआ सूरज को
डूबते जा रहा है
गांव के सुंदर राह में घास उग गया है।
सुबह हो गई भाईयों एवं बहनो
अपनी बुद्धि ज्ञान को बांटो
शांति की राह में, प्रेम भरी राह में
हर दिन अच्छी राह में
जी में उठता छाया का ही सोच
बिन बंटे दिल में गीत गूंज रहा है
जात पात छोटे-बड़े
बाँटा कभी इंतजार नहीं करता है।
सब लोग एक साथ गूंथें हुए की तरह।
नयी खिली हुई फूल की खुशबू ही अनूठा है
नयी सुबह के साथ उजाला होती है।
प्यार प्रेम नियति से काम हो।
इतिहास को न बांटे
एक व्यक्ति ही काफी है सताने को
समूचे संसार में एक सामान फूल खिले हुए हैं।

37. दिशुम मुचड चि सेटेर तना

होड़ो कोबु सेंगि तना
दिशुम तब हड़िङ्ग तना।
जिलिङ होरा दुंगुई तना
सिरमा इपिल जपा तना।।
बुरू चुटकाय को हंदि तना
इकिरसाबेन तेम्बो तना।
    हाय दिसुम मुचड चि सेटेर तना
    हाय दिसुम मुचड चि सेटेर तना।।
बबा चउलि गोम गोंदलि
रम्बा रेयाड़ि मुगि कुड़ति
    चास लगिड नोते बु रिंगा तना,
    हाय दिसुम मुचड चि सेटेर तना।।
नोते नाम-नामते बुरूबु नुज़ाड़ तन,
नोते नाम-नामते बुरूबु नुजाड़ तन।
बुरू नुजाड़ तानते दरू मुचड तना,
बुरू नुजाड़ तानते दरू मुचड तना।।
    दारू मुचाडडे तनेते होयो बिसि तन,
    दारू मुचाडडे तनेते होयो बिसि तन।
सोना गमा तुन्डु तना।
रिंगा मोरोंगा होबा तना।।
    हाय दिसुम मुचड सेटेर तना,
    हाय दिसुम मुचड सेटेर तना।
खदान कारखाना लालि यना
होड़ो को ताबु जुमुरे यना।।

37. दुनिया के अंतिम पड़ाव में

मनुष्य की संख्या बढ़ गई
देश हमारा बंट गया
लम्बी राह छोटी हो गई
आसमान के तारे निकट हो गए।
पहाड़ की चोटी धंस रही है
पानी की गहराई कम हो रही है।
हाय रे! दुनिया का अंत करीब है
हाय! दुनिया का अंत निकट है।
धान चावल गेहूँ गोंदलि
उरद रहड़ मूंग कुलथी
खेती योग्य जमीन कम हो गई
हाय! दुनिया का अंत निकट है।
जमीन की तलाश में, जंगल उजड़ रही
जमीन की तलाश में, जंगल पहाड़ उजड़ रही
जंगल उजड़ने से पेड़ पौधे नष्ट हो रहे
जंगल उजड़ने से पेड़ पौधे नष्ट हो रहे।
सोना का श्रोत अंत हो रहा
अकाल पड़ रही है।
हाय रे दुनिया का अंत करीब है।
हाय रे दुनिया का अंत करीब है।
खाद्यान्न, कारखाना बढ़ गया
मनुष्य की संख्या बढ़ गई।।
बड़ी आकार का पुल बना
हवाई जहाज बन गया

मरङ पुल को बड़ी याना
अपिर गड़ि बड़ी याना
मोटोर गड़ि लालि यना।।
बंदुक रायफल कमि तना,
बम बारूद उमि तना
हाय दिशुम मुचड चि सेटेर तना,
हाय दिशुम मुचड चि सेटेर तना।।
नेलि: तनाञ दिमसि हिला हिपिला
नेलि तनाञ जावगे जाव एसेर ए पेसेर।।
हाय दिशुम मुचड चि सेटेर तना
हाय दिशुम मुचड चि सेटेर तना।।

सागु समड (तुर्तुङ)

38. दिसुम अमिङ होरा कोरे

मुरे बाड़ा गुलब बाड़ा
जिलि मिलि रिमिल तना
ओल संगि सोमय नेलेम तुरतुङ तेबा लेना।
दिसुम दरू चेणे को बकॅणा
कचिम अयुमे तना ककला
झार बितर झारखण्डी एला उटन में।
अडिन्या पइटि कोरेगे अन्डिया
बगेम तिसिंग अरकि हंडिया
हेताय नेलेम दिसुम तम मेड्द अम जोरोय:
बुरूकोते बकइयाअकन
सोना पेरेय सिंगराकन

मोटर सर्विस की संख्या बढ़ गया।
बंदूक, रायफल अपना काम कर रहा है
बम बारूद का प्रचार-प्रसार हो चला।
हाय रे! देश अंतिम पड़ाव पर पहुँचा।
हाय रे! देश अंतिम पड़ाव पर पहुँचा।
हर दिन घृणा की नजरों से देखता हूँ
हर कुछ छीनने की नजर से देखता हूँ
हाय रे! देश अंतिम पड़ाव पर पहुँचा
हाय रे! देश अंतिम पड़ाव पर पहुँचा।

38. दुनिया कटाव के राह में

पलाश फूल, गुलाब फूल
झिलमिल आकाश के नीचे
सूरज निकलने का समय हो चला
पेड़ों में चिड़िया चह चहा रही है
क्या तुझे सुनायी नहीं पड़ रहा है।
झार के अंदर रहने वाले झारखण्डियों उठो
ताकतवर अपना ताकत दिखाओ
आज से हड़िया दारू त्याग दो।
देश की दुर्दशा देख आंसू बहाओगे।
जंगल की ओर जंगली घेरान
सोना से सिंगार किया हुआ
ऐसा देश हजारो वर्ष के बाद भी नहीं मिलेगा
भैंस की तरह बांह है तेरा
चट्टान की तरह छाती है

हजार जोनोम कोरे नेकन दिसुम काबेन नमेया।
कड़ा लेका सुपु तेमा
दिरि लेका कुअम तमदो
अबेन लेकन कोगे दिसुम तिन्डिम दईय:।
दिसुम अतु तन उलं
टेपेन मिसा दोअ सुलं
हिर्ला "वारङ्ग दड़े" मेन कुइड सुबिन मे।
बुरू कबुतर वीर होनको
जोनोम तोरसा सर सबको
रितुंइ गोन्डाई नुतुम केहते सर दो सेकेयेम।
उदुब चुन्डुल सर दो तुञमे।
कजि मुचडस कपिते हेसिइम
दिसुम दका रेए तन को चुइलय उरूमको।
गुटि-गुटि गइको लेका
गड़ा गेना-गेना हइको लेका
दुमुर-झुमुर दिसुम अमिङ होरो कोरे लेका सँगिन में।
मयोम गड़ा हिजिन मिसिङ
होटां सेरोम सेनो मिसिञ
दिसुम अमिङ होरा कोरे सती गोजेन बेन।
नेकन जिहड् केते गोजेन बुगिन
अपन: राइज मेन: होनं तिसिङि
जोनोम दिसुम सुकु सरि एनरेम नमेया।
दोडंम बरिया मिड़ जयरा बुड़ि
सदोम चेतन दुब कुड़ि
मयंग बे इड़िग, जंगि मिडेन तोराई सिपिंग जिबोन
अलोका लिपुरो।

जोंगा सिंहकुंटिया

तुम्हारे जैसे लोग ही इस देश का सहारा बन सकता है।
देश बहने के समय
देश में मिल जाने के समय
अपने लिपि में तू समा जा।
जंगली कबूतर, वीर बच्चे
जन्म लेते ही तीर धनुष पकड़ने वाले हैं।
वीर रितुइ गोन्डाइ का नाम से तीर, धनुष लेते हैं।
दिखाते हैं तीर चलाने की शिक्षा मिलती है
सुनते ही बसलि से सर मुंड़ते है।
देश के रक्षकों को कब पहचानोगे।
भीड़ में है रक्षक
नदी में तैरने वाली मछलियों की तरह
मधुमक्खी के तरह भीड़ वाले राह में
खून की नदी रिस रहा बहनों
गला कट रहा, जान निकल रहा
देश के लिए बलिदान देने वाले राह में
इस तरह जीने से मरना अच्छा
अपना राज्य है आज
जन्मभूमि का सुख तभी मिलेगा।
गिरगिट एक जयरा माँ
घोड़ा के ऊपर सवार होने वाली लड़की
कमर अपना कस लो, तलवार उठाने वाली
जिंदगी के लिए कभी न घबराएें।

39. जःइ तः अ् रेयो अलोम कजिया

बलेः बले जेटे सिंगि
अमः गेरमोञ मेड् मुटे
जः इ तः ब् रेयो अलोम कजिया
अञ जिबोन रे अमःगे उडुक मेनः
तरल-तरल तेतःए निदे
नोगोड सिबिल जगर जपागर
जःइ तःअ् रेयो अलोम कजिया
अञ मेड् रे अमः गे उम्बुल मेनः
सेतःअ् पंअः सिसिर दःह
लुमे केन तसड् जिबिर जिबिर
जःइ तःअ् रेयो अलोम कजिया
अञ जिबोन रेन चेणे अपारोब यना
चेतन लतर रकब तन सायड्
डिब डिब न जिबोन रे
जःइ तःअ् रेयो अलोम कजिया
पुटाओ बड़ा अयते मुतुड सोड़न ओटंङ तना
मेडा कड् जपिड् केडा अयते तेयः कुमु
तोरं चुइला ओ का पूरा लेना
जः इ तःअ् रेयो अलोम कजिया
अञ अम लोःड अपासराय होबा यना।

घनश्याम बोदरा
(कोल्हान सकम-पोद दुरङ जुमुर)

39. किसी से न कहना

सुबह-सुबह की धूप में
तुम्हारा मुस्कुरात हुआ चेहरा
किसी से न कहना
मेरा दिल में तुम्हारी ही याद बसा है।

उजली भरी चांदनी रात में
मीठी-मीठी बातचीतों की
किसी से न कहना
मेरी आंखों में तुम्हारी ही छवि है।

शीत भरी सुबह पहर में
भींग जाती है घास की शीत से
किसी से न कहना
मेरी जिंदगी में चिड़ियां ने बास कर लिया है।

ऊपर-नीचे होने वाली सांसों में
धक् धक् होने वाली धड़कन के बारे
किसी से न कहना

खिली फूल की खुशबू चारों तरफ
स्वत: फैल जाती है
खुली आंखें बंद हो गई स्वप्न देखने में
शायद कभी नहीं पूरा होगा
किसी से न कहना
तुम्हारे साथ मेरा प्यार हुआ है।

40. सिंहभूम दिशुम रे

सरिगे को मेनेया:
सिंहभूम दिशुमे रे
कोड़ा होन को दिशुमे रे
    मेमेडा कन को जपिडा कडा
    इम: कन को: मेडा कडा।
पढ़ाव दोबु पढ़ावा कना
नोकोरी दोबु, नोकरी तना:
हागा: को: सबिना बु दुमा: कना:
टोर-टोर बू हुर्टिर तना:
कोल्हान दिशुमे ताबू चनाब चबा: तन्।
    तेगा ना: बुआ को
    कुलुसु बुआ: को
    मर बु उटाना:
    हुदा तोनोल पनाइटी लगिड
    एला: बु जुड़िना

घनश्याम गागराई (अखड़ा)

40. सिंहभूम राज्य में

सच ही कहते हैं
सिंहभूम राज्य में
पुरूषों के देश में
आंख वाले, आंख बंद किये हैं
सोये वालों का आंख खुला हुआ है।
पढ़ने का तो पढ़े लिखे हैं
नौकरी तो, नौकरी कर रहे हैं
भाईयों फिर भी सभी सो रहें हैं।
टर–टर खर्राटें मार कर
कोल्हान राज्य हमलोगों की समाप्त हो रही है।
अपने पैरों से हमें रौंद रहे हैं
लात हमें मार रहे हैं
आओ चलो उठें
समाज के लिए काम करें
आओ चलो उठें।

41. लको बोदरा

1. सिङ दिसुम रेबेन तुर लेना
पासेया हातु रेबेन जोनोम लेना
हो हयम लिपि कोबेन नम लेडा
वारंगचिति लिपि कोबेन पंजा लेडा।

2. लिपि रेया ककला कोबेन,
तिनुल लेडा दिसुम रे
लिपि रेया कोरंग कोबेन
बेटा लेडा दिल्ली रे!

3. लड़इ केना बेन लिपि लगिड
बइ लेडा बेन हुदा उनुरूम
हागा मिसिको हुंडि लेना,
एटे:ए तुरतुङ अखड़ा रे

4. हगा मिसि को दुब लेना
लिपि टोंयोल लतर रे
ओल लेडा बेन पुति हो हुदा लगिड
पुति ते तनाज लेडा बेन सिङ दिसुम।

5. सिटिया को पटुवा को नम लेडा सेंड़ा।
लतरयते चेतन जोङ, अबेनः पुति पड़व ते
नम केडा को नला पइटि नुकरि
होन पेजा असुलेन तना को जि केटे ते।

6. दनंग यना बेन अबु तलायते
उमि नुतुम येना बेन अबु हुदा रे
गोहरिया बेन तना ले जि केटे ते
जोअरा बेन तना ले बर ति पंति केते।

डॉ. दमयन्ती सिंकु

41. लको बोदरा

1. सिङ देश में हुए उदय
पासेया गांव में लिए जन्म
हो भाषा लिपि के सृष्टिकर्त्ता हो
वारंगचिति लिपि के अविष्कारक हो!

2. लिपि की गूंज
समस्त देश में किये
लिपि की आवाज
पहुँचाए थे दिल्ली!!

3. लड़े थे लिपि के लिए
बनाये थे समाज की पहचान
सभी भाई–बहनें जमा हुए
एटे:ए तुरतुङ अखड़ा में!!!

4. भाई बहनें बैठे थे
लिपि झंडा के नीचे
लिखें हैं आप पुस्तकें समाज के लिए
आपकी पुस्तकें छायी रहीं सिङ देश में!!!!

5. बच्चे, छात्र पढ़कर ज्ञान अर्जित कियें
नीचे से ऊपर स्तर तक
मिला नौकरी, रोजगार
बाल बच्चे परिवार जीवन निर्वाह कर के

6. हमारे बीच से चले गये
समाज में अपनी पहचान बना कर
आपको नमन करतें हैं, हम
आपको जोहार करते हैं, दो हाथ जोड़कर।

42. जिबोन

चेतन ओते रे सरि जिबोन गेले मेनेअ:
बितर ओते रे किलि–मिलि बिति मेनअ:
निमिन बुगिन् दिसुम जुड़ि अबुआ
ओटंग बु तना को पताह लेका।

अमिंग केते बुरू दारू, हातु बु बई लेड
अमिंग केते दिरि, चोगा हसा बु सार लेड
ससन दिरि–जयरा कोयते जुड़ि
मुचड बु तना को पसाह लेका!!

ओते हसा दिरि दारू, तेबु नइकिया कना
टका बिति सोना–चांदी तेबु नइकि तना
रेंगे रबंग होड़ो को मेन्ते जुड़ि
टोटेअ: बु तना को आ: लेका!!

हगा मिसि गलंग यना बु बड़ा हिसिर लेका
अइया जोनोम रेया जिबोन पसोमेन जोका
नियमेना बु होटो सेरोम सेनोअ: जोका
काबु ओटंगेन हटिया डुलिड लेका!!!

नीरज जगमोहन सिंकू 'चिनगारी'

42. जिंदगी

धरती के ऊपर की जिंदगी की सच्चाई
धरती के नीचे की सम्पत्ति की सच्चाई
इतना सुंदर प्यारा देश है, हमारा मेरे दोस्त
उड़ा रहे हैं, हमें सूखे पत्ते की तरह।
जंगल झाड़ किये साफ बसाये गाँव
साफ़ किये पत्थर, टोला किये समतल
मसना, सरना, जयरा से हमें! मेरे दोस्त
नष्ट कर रहे हैं हमें जंगली पौधे की तरह।
जमीन जायदाद पेड़ पौधे से अमीर हम
धन सम्पत्ति, सोना-चांदी से अमीर हम
गरीब दुखियारी हैं, हम, मेरे दोस्त
नोच खा रहे हैं, हमें साग की तरह!!!!
भाईयों एवं बहनों, आओ गूंथे माला बने हम
सात जन्म की जिंदगी, खत्म होने से पहले
कसमें खाएंगे चाहे गला कटे
कभी न उड़ेंगे हम, सड़क की धूल की तरह!!!

43. सेतः पंङरे

अंङ यना, तुर्र यना
हेन्दे नुबः निरेयना,
तुरोः सिंगि रिमिल दोरे,
जेंगा जुंगुड जन।
    पतह–बुदड्, दुमबु कोरे
    षिसिर जुमं डुमं कोरे
    सोना–रूपा, हिरा, समोम सयका
    जिलब जोलोब तुरतुङ तन।
कोणो, बाड़ा पुटाओ कोरे
नेंदे नुरू दुरं दोरे
चिलिका रूतु बनम केंयो
मेयोङ–मेयोङ बोंगा बकाड़ि कोरे।
    मुतुड–सोड़न होयो कोरे
    सेंणा–सोदोरि नोड़ो कोरे
    मनमि जिबोन–जिनिड दोरे
    ओड़ा उमेन पुयुरेन तन।
पिड़ि कुंडि बाबा लेगे–बेगे
कंणा का:ए बेके:ए बेके:ए
बेड़ा गोड़ा गेले बाबा को
सुसुन दुरं, जादुर इनुङ तन
    निमिन सुगड़ सेतः दोरे
    निरल अरिल नोयो तोरे
    नोगोड सिबिल दुड्डम कोरे
    कुमु–नुमुम निनुङ तन।

लाल सिंह बोयपाई (अखड़ा)

43. सुबह

सुबह हो गई, सूर्य निकल आयी
अंधेरा दूर हो गया
सूर्य निकलने पर आसमान
चमकीला दिखाई पड़ता है।

पत्तों की झुरमुट घास में
शीत पानी की बूंद में
सोना, रूपी, हीरा,शृंगार के जैसे
झिलमिल रोशनी दिखाई पड़ता है।

कली के फूल खिलने पर
काली भौरें की भुनभुनाहट से
जैसे सारंगी, बांसुरी की आवाज
जिस तरह फूलों की बगान में।

भीनी महक हवा में
शिक्षित एवं ज्ञानी लोगों में
जीवंत जिंदगी में
नहा–धो कर साफ हो रहे हैं।

खेतों की लहलहाती धान
कोई शरारत नहीं करेगा
खेतों की फूटी धान
सभी नाच गा एवं जदुर गीत गा रहे हैं।

इतनी सुंदर सुबह तो
स्वच्छ ओला के समान
मीठी नींद सोने वाले
स्वप्न में खेलते कूदते।

44. उटानाबु

उटानाबु सबेन हयतञ हगा मिसिको
सेंया होरा सेसेन लगिड् कबु उसाना।।
दिशुम तबु बपलतना सेंय बनोः ते
सेंया बुद्धि नम जोमपे सोमय मेनः ते
ओकोन हो रे सेंया बनोः दुकु सुमाडा
सेंया होरा सेसेन लगिड् कबु उसाना।।
कयः ओकोए सेंया होरा बोरो गिःते
हेन्दे नुबः रेगे टइना जोरोंङ जकेडगे
नमोः गेया सेंया बुद्ध मोन रिकाऐ
सेंया होरा सेसेन लगिड् कबु उसाना।।
अयुमेपे अरदास अञः सबेन हगा को
सेंया सोमजव एतो जोमपे मेनते
स्कूल कोलावकना हतु-हतु रे
सेंया होरा सेसेन लगिड कबु उसाना।।

सुष्मिता सिरका
साभार (आरसी)

44. उठेंगे

आओ! सभी, भाईयों एवं बहनों
ज्ञान के राह पे चलने के लिए, कभी न पीछे हटेंगे।
देश हमारा डूब रहा, ज्ञान नहीं होने के कारण
ज्ञान, बुद्धि ढूंढ़ने का समय नहीं
जिस भी व्यक्ति में ज्ञान नहीं है, उन्हें दुख ही दुख है
ज्ञान के राह पे
जो भी लाज शर्म से, ज्ञान के राह में चलेगा
आजीवन अंधेरा में ही रहेगा
हमेशा मन में यही सोचें, कि मिलेगा ही ज्ञान बुद्धि
ज्ञान के राह में हमेशा चलने के लिए, कभी न पीछे हटेंगे।
सुनो! हमारी विनती सभी भाईयों
ज्ञान समझें और सीखें
स्कूल खुला है गाँव-गाँव टोला-टोला में
ज्ञान के राह पे चलने के लिए, कभी न पीछे हटेंगे।

सहायक ग्रंथ

1. तुर्तुङ
2. कोल्हान सकम (2005)
3. आरसी (दिसुम संस्था, नई दिल्ली)
4. झारखण्ड सकम
5. हो समाज महासभा – एक परिचय
6. अखड़ा
7. पोद दुरंग जुमुर (कोल्हान सकम)

लेखिका परिचय



नाम : डॉ. दमयन्ती सिंकु (देवगम)

पता : ग्रा.+पो. - खैरपाल, पश्चिमी सिंहभूम (झारखण्ड)

पति : श्री लक्ष्मण देवगम

पिता : स्व. जगमोहन सिंकु

माता : स्व. हर्षमती सिंकु

शिक्षा : बी.ए. (हिन्दी ऑनर्स), एम.ए. (हो) राँची विश्वविद्यालय, राँची, यूजी.सी. नेट, नई दिल्ली (1991), राजीव गाँधी नेशनल फेलोशिप, नई दिल्ली (2005)

पीएच.डी.शोध-हो जनजाति में बा गीत : एक सांस्कृतिक अध्ययन (2011)

प्रकाशित रचनाएँ : हो-हिन्दी शब्दकोश (कजि बुरु), सिंहभूम के शहीद लड़ाका हो, हो एक परिचय, पुति रेया सेतेंग डबुरा को, हो दुरङ हिसिर, हो सीखें, मरङ गोमके जयपाल सिंह मुण्डा, हो व्याकरण ओन्डो निबंधावली।

अप्रकाशित रचनाएँ : हो-दोस्तुर ओन्डो संसकिर, हो-साहित्यकारों की जीवनी, हो-लोकगीत, हो-कहानी संग्रह, हो-लोककथा, हो-दुरंग कोवः सेतेंङ डबुरा (गीत संग्रह), हो भाषा साहित्य : उद्भव एवं विकास।

सम्मान : - विश्व आदिवासी दिवस पर पद्म श्री डॉ. रामदयाल मुण्डा साहित्यकार पुरस्कार (2012),
- आदिवासी भाषा साहित्य संस्कृति, अखड़ा के तृतीय महासम्मेलन में 'अखड़ा सम्मान' (2013)

यात्राएँ : भारत के प्रमुख स्थल, स्वीट्ज़रलैण्ड, नीदरलैंड (हॉलैंड)।

PUBLISHER :-
Jharkhand Jharokha
Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand), Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

ISBN : 978-93-81720-56-1
978-93-81720-56-1

मूल्य : 120.00 रू. मात्र